भास्वती

द्वितीयो भागः

द्वादशवर्गाय संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

क्यू आर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के ऊपर कोने में स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यू आर (QR) कोड कहते हैं। यह क्यू आर कोड आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यू आर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है। बाद में प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यू आर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह कोड आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेंगे।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन करें और ई-सामग्री प्राप्त करें।

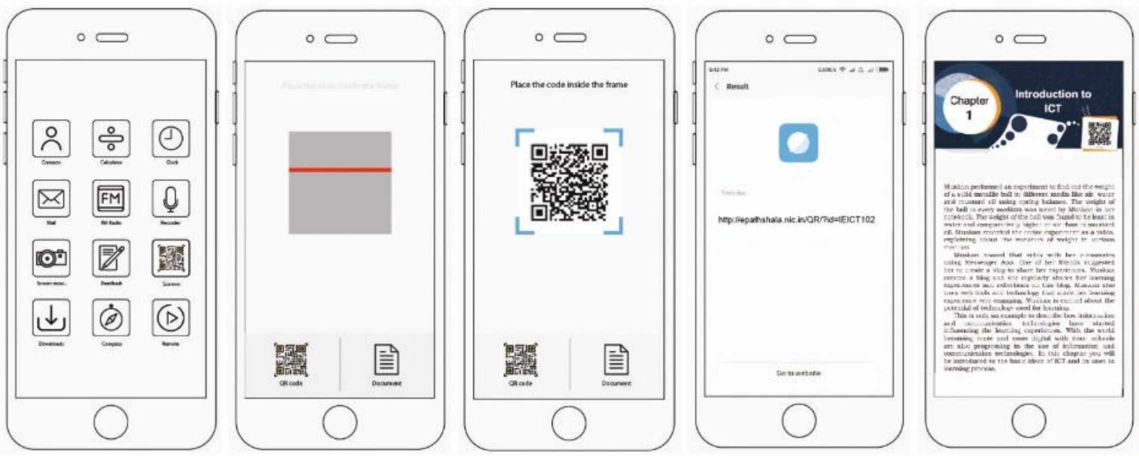

प्ले स्टोर से क्यू आर कोड स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें	क्यू आर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें	स्कैनर को क्यू आर कोड के सामने रखें	लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें	उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

कंप्यूटर या लैपटॉप पर ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाएँ

1. फ़ायरफ़ॉक्स ( ), क्रोम ( ) आदि वेब ब्राउज़र खोलें।
2. ई-पाठशाला वेबसाइट पर जाएँ (http//:epathshala.nic.in)।
3. 'एक्सेस ई-सामग्री' वाले बॉक्स पर क्लिक करें।
4. प्रत्येक क्यू आर कोड ( ) के नीचे दिए गए अक्षरांकीय कोड को टंकित करें।
5. अब जो लिंक प्रस्तुत हुए हैं, उनके प्रयोग से ई-सामग्री खोजें।

भास्वती

द्वितीयो भागः

द्वादशवर्गाय संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

(केन्द्रिकपाठ्यक्रमः)

12077

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जनवरी 2006 माघ 1927

पुनर्मुद्रण
अक्तूबर 2007 आश्विन 1929
फरवरी 2009 फाल्गुन 1930
दिसंबर 2009 पौष 1931
अप्रैल 2019 चैत्र 1941

PD 15T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

रु. ??.??

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा ....
....
....
.....................??

ISBN 81-7450-637-3

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकटः धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. सिराज अनवर
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरूण चितकारा
मुख्य व्यापार प्रबंधक : अबिनाश कुल्लू
सहायक संपादक : एम. लाल
उत्पादन सहायक : सुनील कुमार

आवरण
आलोक हरि

चित्रांकन
प्रदीप नायक

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय-ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित- शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि- गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभ-

त्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

जनवरी 2006 निदेशकः

नवदेहली राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, पूर्व प्रो.फेसर एवं अध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

समन्वयक

कमलाकान्त मिश्र, पूर्व प्रो.फेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

ओमप्रकाश शर्मा, प्रवक्ता संस्कृत, रा. व. मा. विद्यालय कुरुक्षेत्र, हरियाणा

छविकृष्ण आर्य, उपप्रधानाचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, सेकेंड शिफ्.ट, एण्ड्रयूज गंज, नयी दिल्ली

जगदीश सेमवाल, पूर्व निदेशक, वी. वी. बी. आई. एस., एण्ड आई. एस. पंजाब विश्वविद्यालय, होशियारपुर, पंजाब

पतञ्जलि कुमार भाटिया, रीडर संस्कृत विभाग पी. जी. डी. ए. वी. कॉलेज दिल्ली, विश्वविद्यालय

पी.एन.झा, पी.जी.टी. संस्कृत, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली

योगेश्वर दत्त शर्मा, सेवानिवृत्त, रीडर संस्कृत, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सरोज गुलाटी, पी.जी.टी. संस्कृत, कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, फेज-III, दिल्ली

सरोज चमोली, प्रधानाचार्या, राजकीय बालिका वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बी-1 यमुना विहार, दिल्ली

श्रेयांश द्विवेदी, प्रवक्ता संस्कृत विभाग, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुरूग्राम

विभागीय सदस्य

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, प्रो.फेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

रणजित बेहेरा, असिस्टेंट प्रो.फेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

# आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है। परिषद् ईशदत्त शास्त्री, वेदकुमारी घई एवं रमाकान्त रथ की कृति 'श्री राधा' के अनुवादक गोविन्द चन्द्र उद्गाता प्रभृति आधुनिक साहित्यकारों की भी आभारी है, जिनकी कृतियों से प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्यसामग्री सङ्कलित की गई है।

सत्र 2017-18 में पुस्तक के पुनरीक्षण कार्य के समन्वयन के लिए, के.सी. त्रिपाठी, प्रोफ़ेसर, जतीन्द्र मोहन मिश्र, प्रोफ़ेसर, संगीता शर्मा, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर को परिषद् साधुवाद करती है। पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए परिषद् पी.एन.शास्त्री, प्रोफ़ेसर, कुलपति- राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, रमेश कुमार पांडेय, प्रोफ़ेसर, कुलपति- श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, रमेश भारद्वाज, प्रोफ़ेसर, संस्कृत विभाग-दिल्ली विश्वविद्यालय, रंजना अरोड़ा, प्रोफ़ेसर, विभागाध्यक्ष-डी.सी.एस, एन.सी.ई.आर.टी., आभा झा, पी.जी.टी., संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है।

प्रकाशन कार्य में सक्रिय सहयोग के लिए भाषा विभाग कंप्यूटर स्टेशन के इन्चार्ज परशराम कौशिक, कॉपी एडीटर-विभूति नाथ झा, सर्वेन्द्र कुमार एवं सतीश झा; प्रूफ रीडर राजमङ्गल यादव एवं डी.टी.पी. ऑपरेटर कमलेश आर्या, धन्यवाद के पात्र हैं। पुस्तक के पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग हेतु जगदीश चन्द्र काला, जे.पी.एफ., यासमीन अशरफ, जे.पी.एफ. एवं रेखा शर्मा, डी.टी.पी. ऑपरेटर, भाषा शिक्षा विभाग, हरिदर्शन लोधी, डी.टी.पी. ऑपरेटर, ममता गौड़ संपादक संविदा, प्रकाशन प्रभाग धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत विश्व की एक प्राचीनतम भाषा है। यह भारत की आत्मा तथा भारतीय संस्कृति का मुख्य स्रोत है। संस्कृत भाषा और उसका वाङ्मय राष्ट्र की एक ऐसी निधि है जो सनातन मूल्यों और अभिनव प्रवृत्तियों में समन्वय स्थापित करने की अद्भुत क्षमता से सम्पन्न है। संस्कृत भाषा में एक विशाल ग्रन्थराशि उपलब्ध होती है। इसका प्रथम ग्रन्थ, ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ है। समस्त संस्कृत वाङ्मय को दो भागों में बाँटा जाता है–वैदिक साहित्य एवं लौकिक साहित्य। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत चारों वेद ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद् एवं वेदाङ्गसाहित्य की गणना की जाती है। इसमें आध्यात्मिक विषयों के साथ लौकिक विषयों का भी उल्लेख है।

वैदिक साहित्य के अनन्तर लौकिक साहित्य का परिगणन किया जाता है, जिसकी विभाजक सीमा के रूप में आदिकवि महर्षि वाल्मीकि हमारे सामने आते हैं। एक क्रौंची के विलाप से करुणार्द्र हुए वाल्मीकि के मुख से जो शोकमयी वाणी निःसृत हुई, उसी का लिपिबद्ध स्वरूप रामायण है। इसी आधार पर वाल्मीकि को आदिकवि तथा रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है। वाल्मीकि से ही लौकिक साहित्य का प्रारम्भ माना जाता है। वाल्मीकि के अनन्तर वेदव्यास ने महाभारत का प्रणयन कर कौरवों एवं पाण्डवों के मध्य हुए महान् सैन्य संघर्ष को लिपिबद्ध कर विश्व को शान्ति का उपदेश दिया।

वाल्मीकि से लेकर वर्तमान काल तक संस्कृत साहित्य गंगा के प्रवाह की भाँति निरन्तर प्रवाहित हो रहा है, जिसे प्रमुख रूप से चार भागों में विभक्त किया जा सकता है- महाकाव्य, गद्यकाव्य, चम्पूकाव्य एवं नाट्यसाहित्य।

सरल वैदर्भी रीति में उपनिबद्ध दो महाकाव्यों रघुवंश एवं कुमारसम्भव के माध्यम से कालिदास ने उत्तरवर्ती कवियों के समक्ष महाकाव्य का एक सर्वमान्य स्वरूप प्रस्तुत किया। कालक्रम के प्रभाव से अलंकारमयी शैली का प्रादुर्भाव हुआ, जिसमें किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवध आदि अपेक्षाकृत कठिन काव्यों की रचना हुई। गद्यकाव्य के क्षेत्र में बाणभट्ट, दण्डी तथा सुबन्धु ने संस्कृत गद्य को एक ऐसी ऊँचाई तक पहुँचाया कि वर्तमान काल में भी गद्य का आदर्श वे ही माने जाते हैं। गद्य तथा

पद्यमय काव्यों को चम्पूकाव्य माना गया, जिसमें नलचम्पू आदि प्रमुख हैं। नाटक, जो कि रूपक का ही एक भेद है, संस्कृत साहित्य का रमणीय अङ्ग है। कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तल को अनुवाद के माध्यम से पढ़कर पाश्चात्य जगत् ने संस्कृत को यूरोपीय भाषाओं तथा संस्कृत को सम्मान की दृष्टि से देखा तथा तुलनात्मक अध्ययन कर भाषा विज्ञान नामक एक नवीन विज्ञान की धारा का सूत्रपात किया।

प्रस्तुत संकलन में मङ्गलम् के अतिरिक्त कुल बारह पाठ हैं। 'मङ्गलम्' के प्रथम मन्त्र में कल्याण की प्राप्ति हेतु दान, अहिंसा तथा परस्पर मिलकर चलने का संकल्प व्यक्त किया गया है। दूसरे मन्त्र में धनैश्वर्य की प्राप्ति हेतु सुपथ पर ले चलने की प्रार्थना, तृतीय मन्त्र में मित्र, शत्रु व अनिष्ट से अभय की भावना तथा अन्तिम मन्त्र में तप और दीक्षा को राष्ट्रीय भावना एवं सामर्थ्य का मूल बताकर राष्ट्र के प्रति विनम्र रहने की कामना की गई है।

प्रथम पाठ **'अनुशासनम्'** तैत्तिरीय उपनिषद् से संगृहीत है। इसमें आचार्य, शिष्यों को नैतिक मूल्यों का उपदेश देते हैं। इसमें सत्य बोलने, सत्याचरण करने, स्वाध्याय और प्रवचन में प्रमाद न करने, माता-पिता, आचार्य एवं अतिथि को देवता मानकर सत्कार करने का पावन उपदेश दिया गया है। इस पाठ में दी गई शिक्षाएँ सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक हैं।

द्वितीय पाठ **'न त्वं शोचितुमर्हसि'** महाकवि अश्वघोष रचित 'बुद्धचरितम्' से संकलित है। इस पाठ में सिद्धार्थ महाभिनिष्क्रमण के लिए गृहत्याग करते हैं, सारथी छन्दक उन्हें भार्गव ऋषि के आश्रम तक पहुँचाते हैं। छन्दक को राजमहल की ओर जाने के लिए कहने से पहले वे उसकी स्वामिभक्ति की प्रशंसा करते हैं। इस पाठ में सिद्धार्थ छन्दक द्वारा राजा को सन्देश भेजते हुए कहते हैं कि वियोग तो इस संसार से निश्चित (ध्रुव) है, अपनों से वियोग भी अवश्यंभावी है अतः मेरे वनवास जाने पर वे शोक न करें।

तृतीय पाठ **'मातुराज्ञा गरीयसी'** महाकवि भास विरचित 'प्रतिमा-नाटकम्' से लिया गया है। संस्कृत के लब्धप्रतिष्ठ नाटककार भास ने कैकेयी के प्रति राम की अद्भुत निष्ठा एवं आदर की भावना प्रस्तुत की है। राम के राज्याभिषेक न होने देने में एवं राम के वनगमन में कैकेयी प्रमुख कारण होने पर भी राम कैकेयी माता की उस आज्ञा को भारतीय संस्कृति के अनुरूप हितकारिणी ही मानते हैं।

चतुर्थ पाठ **'प्रजानुरञ्जको नृपः'** महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है। पाठान्तर्गत श्लोकों में रघुकुल के राजाओं के गुणों के वर्णन के माध्यम से संसार के शासकों को संदेश देने का प्रयास किया गया है। महाकाव्य के आधार पर राजा का मुख्य धर्म प्रजा का अनुरञ्जन करना है। राजा को प्रजा के कल्याण के लिए ही प्रजा से कर लेना चाहिए, कालिदास इसके माध्यम से राजा के अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

पञ्चमपाठ **'दौवारिकस्य निष्ठा'** आधुनिक विद्वद्वरेण्य प. अम्बिकादत्त व्यास द्वारा लिखित 'शिवराजविजय' नामक संस्कृत उपन्यास से संकलित है। इस ग्रन्थ में लेखक ने शिवाजी एवं औरङ्गजेब के संघर्ष को आधार बनाया है। इस पाठ में प्रतापदुर्ग के मुख्य द्वारपाल की ईमानदारी तथा स्वामिभक्ति की महत्ता बड़े ही अभिनयात्मक ढंग से संन्यासी वेशधारी गौरसिंह द्वारा द्वारपाल की परीक्षा लेकर प्रदर्शित की गई है।

षष्ठ पाठ **'सूक्तिसौरभम्'** में प्राचीन एवं अर्वाचीन उभयविध कवियों की चुनी हुई कुछ सूक्तियों को उपनिषद्ध किया गया है। जहाँ नीतिविदों में प्रसिद्ध चाणक्य, भर्तृहरि, विष्णुशर्मा, महाकवि विह्लण की सूक्तियों का संग्रह है वहाँ आधुनिक कवियों में भट्टरामनाथशास्त्री, मङ्गलदेवशास्त्री आदि मनीषियों की सूक्तियाँ इस पाठ में चयनित हैं।

सातवाँ पाठ **'नैकेनापि समं गता वसुमती'** कवि प्रवर बल्लालसेन रचित भोजप्रबन्ध से संकलित है। इस पाठ में 'अतिलोभो न कर्तव्यः' का पावन संदेश दिया गया है। लोभी व्यक्ति किसी भी घृणित कार्य से नहीं हिचकिचाता। इसी प्रकार के लोभ की अतिशयता से अभिभूत भोज का चाचा मुञ्ज, बालक भोज की हत्या का षडयन्त्र करता है। भोज मृत्यु से पूर्व एक सन्देश श्लोक के रूप में अपने रक्त से लिखकर भेजते हैं। श्लोक के इस भाव को समझकर मुञ्ज का मन बदल गया और वैराग्यशील होकर वन जाने को उद्यत हो गया तथा भोज को पुनर्जीवित करने का यत्न सोचने लगा। बुद्धिसागर नामक महामात्य की सहायता से भोज की प्राणरक्षा हुई।

आठवाँ पाठ **'हल्दीघाटी'** आधुनिक संस्कृत के सुकवि ईशदत्त शास्त्री द्वारा रचित 'प्रतापविजय' से संगृहीत है। यह पाठ राष्ट्र को वर्तमान व भावी पीढ़ी में राष्ट्रीय भावना के अभ्युदय की पुनीत प्रेरणा प्रदान करता है। महाराणा प्रताप के पास यद्यपि मुगल सम्राट् के समान धनबल व सैन्यबल नहीं था फिर भी मुगल साम्राज्य से अपने राज्य तथा स्वाभिमान की रक्षा हेतु लोहा लेते रहे। प्रतापविजय

नामक इस खण्ड-काव्य में लेखक ने हल्दीघाटी के प्रत्येक रजःकण को प्रताप के संघर्ष का साक्षी माना है। यह पाठ युवकों के लिए विशेष प्रेरणा का स्रोत है।

नवम पाठ **'मदालसा'** जम्मू विश्वविद्यालय की आचार्या श्रीमती वेदकुमारी घई द्वारा लिखित 'पुरन्ध्रीपञ्चकम्' नामक रूपक संग्रह से संकलित है। आधुनिक नाट्य रचनाओं में पुरन्ध्रीपञ्चकम् लब्धख्याति रूपक संग्रह है। प्रस्तुत पाठ में राजकुमार ऋतुध्वज तथा मदालसा के संवाद के माध्यम से लेखिका ने राजकुमारी मदालसा के स्वाभिमान एवं नारी अस्मिता का एक नए परिप्रेक्ष्य में वर्णन किया है।

दशम पाठ **'प्रतीक्षा'** उड़िया साहित्य के मूर्धन्य लेखक श्री रमाकान्तरथ के उड़िया काव्य का अनुवाद संस्कृत भाषा में 'श्रीराधा' नाम से प्रकाशित है। इसके अनुवादक श्री गोविन्दचन्द्र उद्गाता हैं। उसी का एकांश प्रतीक्षा नाम से प्रकाशित है। यह पद्य रहस्यवादी धारा का संस्कृत में प्रतिनिधित्व करता है। इसमें राधा एवं कृष्ण का सख्यभाव प्रदर्शित है। राधा कृष्ण की प्रतीक्षा में अत्यन्त व्याकुल हो जाती है। व्याकुलता में उसकी मनोदशा बड़ी अद्भुत हो जाती है। वह विभिन्न रूपों में कृष्ण की छवि को देखती है। कृष्ण की यह छवि अनिर्वचनीय है। उनके सकल रूप का वर्णन असम्भव है। कण-कण में विद्यमान वह उपास्य भक्त को अनेक रूपों में दिखाई देता है। एक प्रकार से यह गीत प्रतीकात्मक व रहस्यात्मक है।

एकादश पाठ **'कार्याकार्यव्यवस्थितिः'** श्रीमद्भगवद्गीता के षोडश अध्याय 'दैवासुरसम्पद्विभागयोग' से उद्धृत है। इसमें बताया गया है कि दैवी प्रकृति सांसारिक दुःख से मुक्ति देनेवाली है और आसुरी प्रकृति दुःख एवं बन्धनकारक है। अतः दैवी प्रकृति का सम्पादन करने के लिए एवं आसुरी प्रकृति को त्यागने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण उपदेश करते हैं।

द्वादश पाठ **'विद्यास्थानानि'** दशम शतक के कविराज राजशेखर कृत 'काव्यमीमांसा' नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ से उद्धृत है। इसमें वैदिक वाङ्मय और उत्तरवैदिक साहित्य की विभिन्न शाखाओं का वर्णन करते हुए विद्या के चौदह स्थान का उल्लेख है, जो संस्कृत अध्ययन के व्यापक क्षेत्र को दर्शाता है।

यद्यपि इस संकलन को यथासंभव छात्रोपयोगी एवं स्तर के अनुरूप बनाने का प्रयास किया गया है। तथापि इसे छात्रों के लिए और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

शिक्षकों से निवेदन

शिक्षकों से निवेदन है कि वह पाठों को पढ़ाते समय अधोबिन्दुओं पर ध्यान दें–

'अनुशासनम्' पाठ का अध्यापन करते समय पाठ के अतिरिक्त नैतिक मूल्यों का परिचय भी दें तथा पाठान्तर्गत शिक्षाओं की सार्वभौमिकता एवं सार्वकालिकता के सम्बन्ध में बताएँ तथा उपनिषद् साहित्य का संक्षिप्त परिचय दें।

बुद्धचरित के आधार पर महात्मा बुद्ध के संदेश एवं महाकवि अश्वघोष का साहित्यिक परिचय दें।

महाकवि भास की नाट्यरचनाओं का परिचय तथा राम के आदर्शों का एवं नैतिक मूल्यों से छात्रों को परिचित करवाएँ। शिक्षक छात्रों को अभिनय कला के प्रति प्रेरित करें।

'प्रजानुरञ्जको नृपः' के आधार पर महाकवि कालिदास के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का दर्शन कराएँ एवं प्रजानुरञ्जन ही राजा का मुख्य धर्म है, राम के इस आदर्श को बालकों के मानस में संविष्ट करें।

'दौवारिकस्य निष्ठा' पाठ के माध्यम से कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा, ईमानदारी एवं स्वामिभक्ति जैसे मूल्यों का प्रतिपादन तथा संस्कृत के कथा साहित्य का परिचय देकर आधुनिक लेखक अम्बिकादत्त व्यास के कृतित्व से परिचित करवाएँ। उनके सम्पूर्ण शिवराज विजय को मूल (तथा हिन्दी अनुवाद) पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

'सूक्तिसौरभम्' की प्राचीन एवं अर्वाचीन सूक्तियों के माध्यम से छात्रों के अन्तःकरण में नीति-निर्देशक तत्त्वों का अंकुर प्रस्फुटित करें।

'नैकेनापि समं गता वसुमती' पाठ के आधार पर भौतिक उपलब्धि को जीवन का सर्वस्व न मानें इस मूल्य से छात्रों को प्रेरित करें तथा कवि प्रवर बल्लालसेन के साहित्य का परिचय भी दें।

'हल्दीघाटी' पाठ में महाराणा प्रताप के शौर्य के माध्यम से विपरीत परिस्थितियों के बावजूद लक्ष्य के प्रति अपराजय भाव से अडिग रहने की प्रेरणा दें।

'मदालसा' पाठ के आधार पर नारी के स्वाभिमान एवं नारी के गौरव का सन्देश छात्रों के अन्तःकरण में सन्निविष्ट करें।

'प्रतीक्षा' पाठ के माध्यम से संस्कृत वाङ्मय में अनूदित साहित्य का सामान्य परिचय दें।

'कार्याकार्यव्यवस्थितिः' पाठ मनुष्य के लिए कर्तव्य एवं अकर्तव्य का ज्ञान देता है। छात्रों को अपने दैनन्दिन जीवन में इस बात का परीक्षण करने एवं अपनाने के लिए प्रेरित करें।

'विद्यास्थानानि' पाठ संस्कृत वाङ्मय के प्राचुर्य को एवं अध्ययन के विभिन्न आयामों को सङ्केतित करता है। आधुनिक समय में अध्ययन के विभिन्न विषयों के संदर्भ में इसे देखना चाहिए।

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठाङ्काः
पुरोवाक्		*iii*
भूमिका		*vii*
मङ्गलम्		1
प्रथमः पाठः	अनुशासनम्	3
द्वितीयः पाठः	न त्वं शोचितुमर्हसि	8
तृतीयः पाठः	मातुराज्ञा गरीयसी	16
चतुर्थः पाठः	प्रजानुरञ्जको नृपः	27
पञ्चमः पाठः	दौवारिकस्य निष्ठा	34
षष्ठः पाठः	सूक्ति-सौरभम्	43
सप्तमः पाठः	नैकेनापि समं गता वसुमती	52
अष्टमः पाठः	हल्दीघाटी	63
नवमः पाठः	मदालसा	72
दशमः पाठः	प्रतीक्षा	82
एकादशः पाठः	कार्याकार्यव्यवस्थितिः	87
द्वादशः पाठः	विद्यास्थानानि	94
परिशिष्ट	अनुशंसित ग्रन्थ	100

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति कों सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

12077CH01

प्रथमः पाठः

अनुशासनम्

प्रस्तुत अंश वैदिक वाङ्मय में अद्वितीय स्थान रखने वाले तैत्तिरीय उपनिषद् के ग्यारहवें अनुवाक (शिक्षावल्ली) से संकलित है। उपनिषदों का प्रादुर्भाव वैदिक ज्ञान के विकास रूप में हुआ है। उपनिषद् का अर्थ है (ज्ञानार्थ) गुरु के समीप बैठना। इस गुरुशिष्य परम्परा में अध्ययन के उपरान्त आचार्य के द्वारा शिष्य को जीवनोपयोगी यह उपदेश दिया गया। यह मनोरम उपदेश इतने सहजभाव से प्रस्तुत किया गया है कि सीधा हृदय को स्पर्श करता है।

वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि। अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः, युक्ता आयुक्ताः, अलूक्षा धर्मकामाः स्युः, यथा ते तत्र वर्तेरन् तथा तत्र वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवं चैतदुपास्यम्।

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

अनुशासनम्	-	अनु + शास् + ल्युट्, आदेश (शिक्षा)।
अनूच्य	-	अनु + वच् + ल्यप् (पढ़ाकर)।
अन्तेवासिनम्	-	गुरोरन्ते समीपे वसतीति अन्तेवासी सप्तमी अलुक् द्वितीया एकवचन, शिष्य को।

अनुशास्ति - अनु + शास् + लट् प्र.पु. एकवचन, उपदेश देता है।
स्वाध्यायात् - स्व + अध्यायात्, पं. एकवचन, स्वाध्याय से।
मा प्रमदः - आलस्य मत करो।
आहृत्य - आ + हृ + ल्यप्, लाकर।
प्रजातन्तुम् - प्रजायाः तन्तुः, द्वितीया एकवचन, वंशपरम्परा को।
मा व्यवच्छेत्सीः - वि + अव् + छिद्, लुङ् म.पु. एकवचन, मत तोड़ो
भूत्यै - भूति चतुर्थी एकवचन, ऐश्वर्य (धन) के लिए।
अनवद्यानि - न + अवद्यानि, नञ् तत्पु., प्रथमा बहुवचन, अनिन्द्य।
इतराणि - दूसरे।
सुचरितानि - सत्कर्म।
उपास्यानि - उपासितुं योग्यानि, प्रथमा बहुवचन, उपासना के योग्य।
श्रेयांसः - कल्याण करने वाले, अधिक श्रेष्ठ।
आसनेन - आसन के द्वारा।
प्रश्वसितव्यम् - प्र + श्वस् + तव्यत्, उचित सम्मान करना चाहिए।
श्रद्धया - श्रद्धा से।
संविदा - सद्भाव से (कर्तव्यभाव से)।
कर्मविचिकित्सा - कर्मणि विचिकित्सा, सप्तमी तत्पुरुष, उचित अनुचित कर्म के विषय में सन्देह।
संमर्शिनः - विचारशील, सहनशील।
युक्ताः - ज्ञान विज्ञान में तृप्त।
आयुक्तः - स्वतन्त्र निर्णय में समर्थ।
अलूक्षाः - अरूक्षाः, कोमल।
धर्मकामाः - धर्मस्य कामाः, कर्त्तव्यपरायण।
वर्तेरन् - वृत् विधिलिङ्, प्र.पु. बहुवचन, व्यवहार करें।
वर्तेथाः - वृत् विधिलिङ्, म.पु. एकवचन, व्यवहार करो।
आदेशः - आज्ञा।
वेदोपनिषत् - वेदस्य उपनिषत्, ष.त.समास, ज्ञान का सार।
उपासितव्यम् - उप + आस् + तव्यत्, उपासना के योग्य।
उपास्यम् - उप + आस् + यत्, उपासना करनी चाहिए।

सन्धिविच्छेदः

आचार्योऽन्तेवासिनम्	-	आचार्यः + अन्तेवासिनम्
स्वाध्यायान्मा	-	स्वाध्यायात् + मा
व्यवच्छेत्सीः	-	वि + अवच्छेत्सीः
सत्यान्न	-	सत्यात् + न
यान्यनवद्यानि	-	यानि + अनवद्यानि
यान्यस्माकम्	-	यानि + अस्माकम्
त्वयोपास्यानि	-	त्वया + उपास्यानि
चास्मच्छ्रेयांसः	-	च + अस्मत् + श्रेयांसः
त्वयाऽऽसनेन	-	त्वया + आसनेन
वेदोपनिषत्	-	वेद + उपनिषद्
चैतदुपास्यम्	-	च + एतत् + उपास्यम्

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) अयं पाठः कस्माद् ग्रन्थात् सङ्कलितः?
(ख) सत्यात् किं न कर्त्तव्यम्?
(ग) आचार्यः कम् अनुशास्ति?
(घ) स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां किं न कर्त्तव्यम्?
(ङ) अस्माकं कानि उपास्यानि?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) आचार्यस्य कीदृशानि कर्माणि सेवितव्यानि?
(ख) शिष्यः किं कृत्वा प्रजातन्तुं न व्यवच्छेत्सीः?
(ग) शिष्याः कर्मविचिकित्सा विषये कथं वर्तेरन्?
(घ) काभ्यां न प्रमदितव्यम्?
(ङ) ब्राह्मणाः कीदृशाः स्युः?

3. रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-

(क) वेदमनूच्याचार्यो .... अनुशास्ति।
(ख) सत्यं .... धर्मं ....।
(ग) यान्यनवद्यानि .... तानि सेवितव्यानि।
(घ) यथा ते तत्र वर्तेरन् ....।
(ङ) एषा ....।

4. मातृभाषया व्याख्यायेताम्-

(क) देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्।
(ख) यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि।

5. अधोनिर्दिष्टपदानां समानार्थकपदानि कोष्ठकात् चित्वा लिखत-

(क) अनूच्य ....
(ख) संविदा ....
(ग) ह्रिया ....
(घ) अलूक्षा ....
(ङ) उपास्यम् ....

(सद्भावनया, सम्बोध्य, लज्जया, अनुपालनीयम्, अरुक्षा)

6. विपरीतार्थकपदैः योजयत-

(क)	सत्यम्	अलूक्षा
(ख)	धर्मम्	अश्रद्धया
(ग)	श्रद्धया	अनवद्यानि
(घ)	अवद्यानि	अधर्मम्
(ङ)	लूक्षा	असत्यम्

7. अधोनिर्दिष्टेषु पदेषु प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत-

प्रमदितव्यम्, अनवद्यम्, उपास्यम्, अनुशासनम्

योग्यताविस्तारः

उपनिषद् - मानवचिन्तनस्य परमोपलब्धिस्वरूपाः उपनिषदः निश्चितरूपेण भारतीयसंस्कृतेः अद्वितीया निधयः सन्ति। उपनिषत्सु संवादमाध्यमेन जीवजगद्ब्रह्मविषयकतत्त्वानां निरूपणमस्ति। एतासाम् उपनिषदां प्रादुर्भावः वैदिकज्ञानस्य विकासपरम्परायां जातः। अस्मात् कारणात् विविधवैदिकशाखानां दार्शनिकचिन्तनविकासक्रमे उपनिषदां विशिष्टं स्थानम् अस्ति।

चतुर्णां वेदानां पृथक् पृथक् उपनिषदः सन्ति। प्रमुखोपनिषदां परिगणनमित्थं कृतम्। ईश-केन- कठ-प्रश्न-मुण्डकमाण्डूक्यतितिरिः बृहदारण्यकछान्दोग्यं च। ईशावास्योपनिषद्, केनोपनिषद्, कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद् इति।

तैत्तिरीयोपनिषद् - उपनिषदियं कृष्णयजुर्वेदस्य तैत्तिरीयसंहितायाः ब्राह्मणग्रन्थस्य अन्तिमो भागः तैत्तिरीयारण्यकमिति कथ्यते। अस्मिन् आरण्यके दशप्रपाठकाः सन्ति। एतेषु प्रपाठकेषु सप्तमतः नवमप्रपाठकपर्यन्तं यो भागः स एव तैत्तिरीयोपनिषद् इति कथ्यते। शिक्षावल्ली ब्रह्मानन्दवल्ली भृगुवल्ली च तेषां क्रमशः नामानि।

शिक्षावल्ली - अयं पाठः शिक्षावल्लीतः सङ्कलितोऽस्ति। शिक्षावल्ली प्रपाठके ओङ्कारस्य महत्त्व- वर्णनं धर्माचरणसम्बन्धिविचारश्च विशदरूपेण प्रस्तुतः।

ब्राह्मणः - ब्रह्मशब्दात् निष्पन्नः। ब्रह्मशब्दो ज्ञानवाचकः। अतः ब्राह्मणः = ज्ञानी।

12077CH02

द्वितीयः पाठः

न त्वं शोचितुमर्हसि

संस्कृत साहित्य में अश्वघोष की गणना भास एवं कालिदास जैसे उच्चकोटि के महाकवियों में की जाती है। दार्शनिक महाकवि अश्वघोष की कृति बुद्धचरितम् का संस्कृत साहित्य में अद्वितीय स्थान है। अश्वघोष का लक्ष्य बुद्ध के उपदेशों को काव्य के माध्यम से जनसाधारण तक पहुँचाना था। प्रस्तुत पाठ बुद्धचरितम् के छठे सर्ग से संकलित है।

इसमें जब सिद्धार्थ महाभिनिष्क्रमण के लिए गृहत्याग करते हैं, तब सारथी छन्दक उन्हें भार्गव आश्रम तक पहुँचाता है। वे वहाँ से आगे अकेले जाने का ही निश्चय करते हैं। छन्दक को राजमहल की ओर जाने के लिए कहने से पूर्व वे उसकी स्वामिभक्ति की प्रशंसा करते हैं।

ततो मुहूर्ताभ्युदिते जगच्चक्षुषि भास्करे।
भार्गवस्याश्रमपदं स ददर्श नृणां वरः ।।1।।

सुप्तविश्वस्तहरिणं स्वस्थस्थितविहङ्गमम्।
विश्रान्त इव यद्दृष्ट्वा कृतार्थ इव चाऽभवत् ।।2।।

स विस्मयनिवृत्त्यर्थं तपः पूजार्थमेव च।
स्वां चानुवर्तितां रक्षन्नश्वपृष्ठादवातरत् ।।3।।

अवतीर्य च पस्पर्श निस्तीर्णमिति वाजिनम्।
छन्दकं चाब्रवीत्प्रीतः स्नापयन्निव चक्षुषा ।।4।।

इमं ताक्ष्योपमजवं तुरङ्गमनुगच्छता।
दर्शिता सौम्य मद्भक्तिर्विक्रमश्चायमात्मनः ।।5।।

को जनस्य फलस्थस्य न स्यादभिमुखो जनः।
जनीभवति भूयिष्ठं स्वजनोऽपि विपर्यये ।।6।।

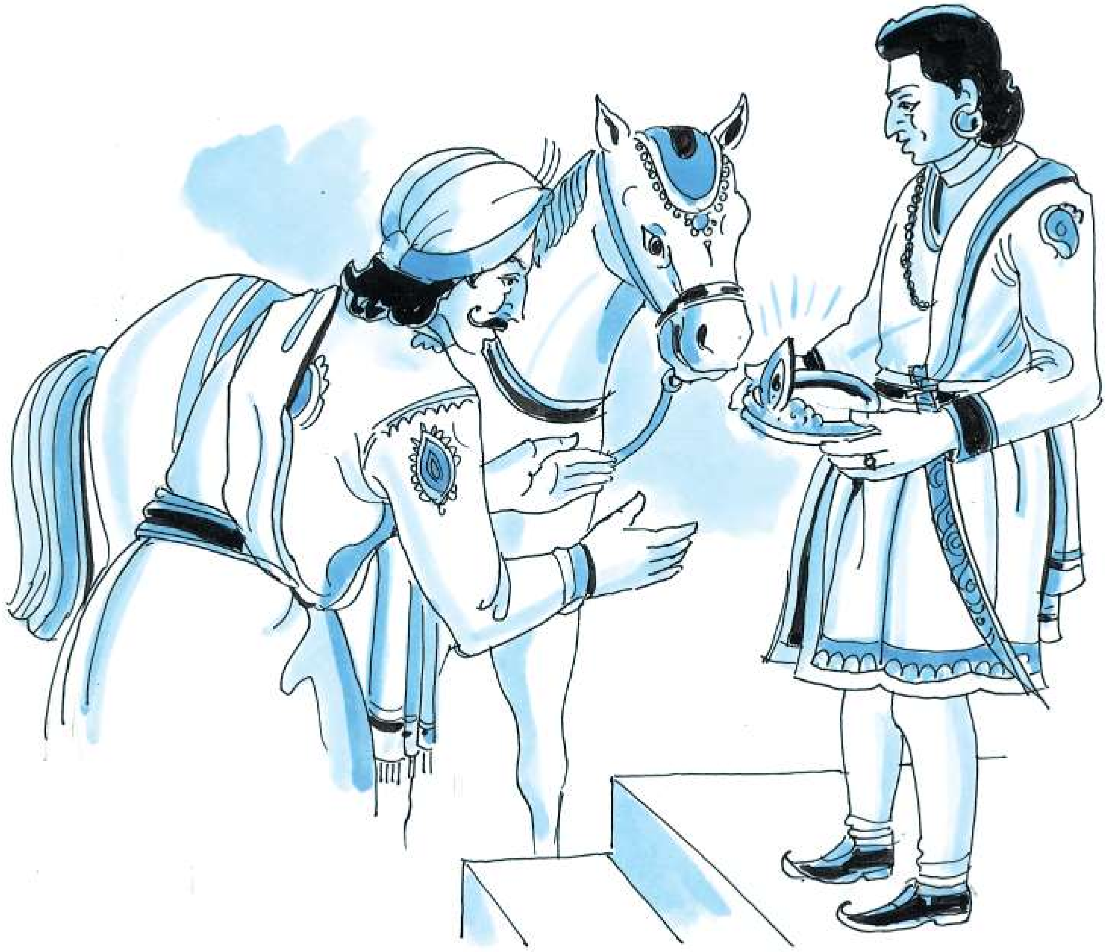

इत्युक्त्वा स महाबाहुरनुशंसचिकीर्षया।
भूषणान्यवमुच्यास्मै सन्तप्तमनसे ददौ ।।7।।

मुकुटाद्दीपकर्माणं मणिमादाय भास्वरम्।
ब्रुवन्वाक्यमिदं तस्थौ सादित्य इव मन्दरः ।।8।।

अनेन मणिना छन्द प्रणम्य हुशो नृपः।
विज्ञाप्योऽमुक्तविश्रम्भं सन्तापविनिवृत्तये ।।9।।

जरामरणनाशार्थं प्रविष्टोऽस्मि तपोवनम्।
न खलु स्वर्गतर्षेण नास्नेहेन न मन्युना ॥10॥

तदेवमभिनिष्क्रान्तं न मां शोचितुमर्हसि।
भूत्वापि हि चिरं श्लेषः कालेन न भविष्यति ॥11॥

ध्रुवो यस्माच्च विश्लेषस्तस्मान्मोक्षाय मे मतिः।
विप्रयोगः कथं न स्याद्भूयोऽपि स्वजनादिति ॥12॥

यदपि स्यादसमये यातो वनमसाविति।
अकालो नास्ति धर्मस्य जीविते चञ्चले सति ॥13॥

एवमादि त्वया सौम्य विज्ञाप्यो वसुधाधिपः।
प्रयतेथास्तथा चैव यथा मां न स्मरेदपि ॥14॥

अपि नैर्गुण्यमस्माकं वाच्यं नरपतौ त्वया।
नैर्गुण्यात्त्यज्यते स्नेहः स्नेहत्यागान्न शोच्यते ॥15॥

शब्दार्थाः

शोचितुम्	-	शुच् + तुमुन्, शोक करने के लिए।
अभ्युदिते	-	अभि + उद् + इ + क्त + सप्तमी एकवचन, उदय होने पर।
ददर्श	-	देखा।
विश्रान्त इव	-	थके हुए की तरह।
अनुवर्तितां	-	अनु + वृत् + इन् + तल्, अनुवर्तिनः भावः अनुवर्तिता (आचरण को)।
अवातरत्	-	अव + तॄ + लङ्, प्र.पु. एकवचन, उतर गया।
अवतीर्य	-	अव + तॄ + ल्यप्, उतरकर।

पस्पर्श	-	स्पृश् + लिट्, प्र. पु. एकवचन, स्पर्श किया।
निस्तीर्णम्	-	निस् + तध + क्त, पार लगाया।
तुरङ्गमनुगच्छता	-	घो\ड़े का अनुसरण करते हुए।
जनीभवति	-	अजनो जनः भवति इति, (विपरीत) स्वजन का सामान्य हो जाना।
भूयिष्ठं	-	अतिशयेन बहु + इष्ठन् भ्वादेशे युक् च, अत्यधिक।
विपर्यये	-	विपरीत अवस्था में।
चिकीर्षया	-	करने की इच्छा से।
सन्तप्तमनसे	-	दुःखी मनवाले को (दानार्थे चतुर्थी)।
भास्वरमणिम्	-	चमकीली मणि को।
तस्थौ	-	स्थित हुए।
बहुशः	-	बार-बार।
स्वर्गतर्षेण	-	स्वर्ग की इच्छा से।
न मन्युना	-	क्रोध से नहीं।
श्लेषः	-	संयोग (मिलन)।
विप्रयोगः	-	वि + प्र + युज् + घञ्, वियोग।
यातः	-	या + क्त, गया।
जीविते	-	जीव् + क्त, सप्तमी एकवचन, जीवन।
विज्ञाप्यः	-	वि + ज्ञा + णिच् + पुक् + यत्, निवेदित (किया जाये)।
प्रयतेथाः	-	प्र + यत् + विधिलङ्, म.पु. एकवचन, प्रयत्न करो।
नैर्गुण्यम्	-	निर् + गुण + ण्यत्, निर्गुणता।
न शोच्यते	-	शोक का पात्र नहीं।

सन्धिविच्छेदः

जगच्चक्षुषि	-	जगत् + चक्षुषि
चानुवर्तिताम्	-	च + अनुवर्तिताम्
रक्षन्नश्वः	-	रक्षन् + अश्वः
स्नापयन्निव	-	स्नापयन् + इव
ताक्ष्र्योपम	-	ताक्ष्र्य + उपम
अभिमुखो जनः	-	अभिमुखः + जनः
स्वजनोऽपि	-	स्वजनः + अपि
इत्युक्त्वा	-	इति + उक्त्वा
भूषणान्यवमुच्य	-	भूषणानि + अवमुच्य
बहुशो नृपः	-	बहुशः + नृपः
प्रविष्टोऽस्मि	-	प्रविष्टः + अस्मि
तपोवनम्	-	तपः + वनम्
स्याद्भूयोऽपि	-	स्यात् + भूयः + अपि
वनमसाविति	-	वनमसौ + इति
प्रयतेथास्तथा	-	प्रयतेथाः + तथा

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) अयं पाठः कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलितः?

(ख) बुद्धचरितस्य रचयिता कः अस्ति?

(ग) नृणां वरः कः अस्ति?

(घ) अश्वपृष्ठात् कः अवातरत्?

(ङ) स्नापयन्निव चक्षुषा प्रीतः कम् अब्रवीत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) स्वजनस्य विपर्यये का स्थितिः भवति?

(ख) महाबाहुः सन्तप्तमनसे किं ददौ?

(ग) बुद्धः किमर्थं तपोवनं प्रविष्टः?

(घ) त्वं कीदृशं मां न शोचितुमर्हसि?

(ङ) कस्मिन् सति कस्य अकालः नास्ति?

3. अधोलिखितेषु सन्धिं कुरुत-

त्यागात् + न, च + एव, विश्लेषः + तस्मात्, न + अस्नेहेन, बहुशः + नृपः

4. अधोलिखितेषु प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत-

सुप्तः, विश्रान्तः, दृष्ट्वा, अवतीर्य, भूयिष्ठम्, आदाय, विज्ञाप्य, वाच्यम्

5. अधोलिखितश्लोकयोः हिन्दी/आङ्ग्लभाषया अनुवादः कार्यः

(क) मुकुटाद्दीपकर्माणं मणिमादाय भास्वरम्।
ब्रुवन्वाक्यमिदं तस्थौ सादित्य इव मन्दरः।।

(ख) जरामरणनाशार्थं प्रविष्टोऽस्मि तपोवनम्।
न खलु स्वर्गतर्षेण नास्नेहेन न मन्युना।।

6. 'न त्वं शोचितुमर्हसि' इति पाठस्य सारांशः मातृभाषया लेखनीयः।

7. रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) न त्वं .... अर्हसि।

(ख) स ददर्श .... आश्रमपदम्।

(ग) स विस्मयनिवृत्यर्थं .... च।

(घ) जनीभवति भूयिष्ठम् .... विपर्यये।

(ङ) अकालः .... धर्मस्य।

8. विशेष्य-विशेषणयोः योजनं कुरुत-

(क) भास्करे	(क) अभिमुखः
(ख) जनः	(ख) भास्वरम्
(ग) मणिम्	(ग) जगच्चक्षुषि
(घ) जीविते	(घ) अभिनिष्क्रान्तम्
(ङ) माम्	(ङ) चञ्चले

9. उदाहरणानुसारं विग्रहपदानि आधृत्य समस्तपदानि रचयत-

विग्रहपदानि	**समस्तपदानि**
न स्निग्धः	अस्निग्धः
आदित्येन सह	....
स्वर्गाय तर्षः	....
न कालः	....
महान्तौ बाहू यस्य सः	....
वसुधायाः अधिपः	....

10. अधोलिखितपदानां विपरीतार्थकपदैः मेलनं कुरुत-

पदानि	**विपरीतार्थकपदानि**
(क) सुप्तः	(क) चञ्चलः
(ख) अवतीर्य	(ख) रंकः
(ग) स्वजनः	(ग) जागृतः
(घ) नृपः	(घ) आरुह्य
(ङ) ध्रुवः	(ङ) परजनः

योग्यताविस्तारः

अश्वघोषः - अश्वघोषः संस्कृतसाहित्यस्य सुप्रसिद्धः कविः। अस्य कालः ईशायाः प्रथमशताब्दी स्वीक्रियते। अयं सम्राट् कनिष्कस्य समकालिकः आसीत्। अस्य कवेः सौन्दरनन्दम्। बुद्धचरितम् शारिपुत्रप्रकरणं च रचनात्रयं विद्यते। अस्य रचनासु बुद्धोपदेश एव प्रमुखरूपेण दृश्यते। महाकवेः अश्वघोषस्य रचनाः तिब्बते चीनदेशे च प्रसिद्धाः। सौन्दरानन्दम् अष्टादशसर्गात्मकं प्रथमं महाकाव्यम् उपलभ्यते। अस्मिन् महाकाव्ये बुद्धोपदेशस्य कथाया वर्णनम् अस्ति। बुद्धः विमातृजं स्वभार्याप्रेमपाश बद्धं नन्दम् उपदिशति। नन्दः बुद्धोपदेशप्रभावेण सांसारिकसुखं परित्यज्य प्रव्रज्यां स्वीकरोति। शारिपुत्रप्रकरणम् इति नाटिका खण्डितावस्थायां लभ्यते।

बुद्धचरितम् - बुद्धचरितम् अश्वघोषस्य प्रसिद्धं महाकाव्यम् अस्ति। अस्मिन् महाकाव्ये सप्तदश सर्गाः उपलभ्यन्ते। तत्र महात्मनः बुद्धस्य सवाङ्गीणचरितं निबद्धमस्ति। यथा-अभिनिष्क्रमणं, तपोवनगमनं, यशोधराविलापः, मगधयात्रावर्णनम्, सिद्धार्थस्य बुद्धत्वप्रापणम्, धर्मप्रचारः, शिक्षाप्रसारः इत्यादयः विषयाः सरलया भावपरिपूर्णया हृदयावर्जकशैल्या वर्णिताः।

भाषाज्ञानम् - न मां शोचितुमर्हसि-तुमुनन्तपेदन अर्हधातोः प्रयोगेण अनुरोधः निवेदनं वा प्रकटीभवति। एवमेव अन्यानि वाक्यानि रचनीयानि।

1. रात्रिर्जाता, अतः त्वं स्वप्तुम् अर्हसि।
2. गुरुः इमं मम अपराधं क्षन्तुमर्हति।
3. इदानीं यूयं गन्तुमर्हथ।

जगच्चक्षुषि भास्करे - सूर्यः संसारस्य नेत्ररूपेण निरूपितः यथा श्रुतौ-"तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।"

12077CH03

तृतीयः पाठः

मातुराज्ञा गरीयसी

भारतीय संस्कृति माता-पिता तथा गुरु को देवता की तरह पूजनीय एवं देवतुल्य मानती है। उपनिषत् काल से ही इन की महत्ता प्रतिपादित की गई है। न केवल भारतीय संस्कृति अपितु समस्त विश्व में माता को अत्यन्त पूजनीय तथा उनके आज्ञापालन को परम धर्म के रूप में प्रतिपादित किया गया है। महाभारत के यक्षोपाख्यान में भी माता को जो भूमि से भी गुरुतर बतलाया गया है, उसके पीछे भी यही रहस्य है।

प्रस्तुत पाठ महाकवि भास विरचित प्रतिमा-नाटक से लिया गया है। संस्कृत के महान् नाटककार भास ने कैकेयी के प्रति जो राम की निष्ठा एवम् आदरभावना प्रस्तुत की है-वह इतिहास में अद्वितीय है। राम के राज्याभिषेक न होने देने में तथा उन्हें वनवास दिलाने में कैकेयी कारण है-यह जानकर भी राम कैकेयी माता की उस आज्ञा को भी हितकारिणी ही मानते हैं।

(प्रविश्य)

काञ्चुकीयः - **परित्रायतां परित्रायतां कुमारः।**

रामः - **आर्य! कः परित्रातव्यः।**

काञ्चुकीयः - **महाराज!**

रामः - **महाराजः इति। आर्य! ननु वक्तव्यम्। एकशरीर-संक्षिप्ता पृथिवी रक्षितव्येति। अथ कुत उत्पन्नोऽयं दोषः?**

काञ्चुकीयः - **स्वजनात्।**

रामः - **स्वजनादिति। हन्त! नास्ति प्रतीकारः।**
शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा।
कस्य स्वजनशब्दो मे लज्जामुत्पादयिष्यति।।1।।

काञ्चुकीयः - **तत्र भवत्याः कैकय्याः।**

रामः - किमम्बायाः, तेन हि उदर्केण गुणेनात्र भवितव्यम्।

काञ्चुकीयः - कथमिव?

रामः - श्रूयताम्,

यस्याः शक्रसमो भर्ता मया पुत्रवती च या।
फले कस्मिन् स्पृहा तस्या येनाकार्यं करिष्यति।।2।।

काञ्चुकीयः - कुमार! अलमुपहतासु स्त्रीबुद्धिषु स्वमार्जवमुपनिक्षेप्तुम्। तस्या एव खलु वचनात् भवदभिषेको निवृत्तः।

रामः - आर्य! गुणाः खल्वत्र।

काञ्चुकीयः - कथमिव?

रामः - श्रूयताम्,

वनगमननिवृत्तिः पार्थिवस्यैव ताव-
न्मम पितृपरवत्ता बालभावः स एव।
नवनृपतिविमर्शे नास्ति शङ्का प्रजाना-
मथ च न परिभोगैर्वञ्चिता भ्रातरो मे।।3।।

काञ्चुकीयः - अथ च तयाऽनाहूतोपसृतया भरतोऽभिषिच्यतां राज्य इत्युक्तम् अत्राप्यलोभः?

रामः - आर्यः! भवान् खल्वस्मत्पक्षपातादेव नार्थमवेक्षते। कुतः,

शुल्के विपणितं राज्यं पुत्रार्थे यदि याच्यते।
तस्या लोभोऽत्र नास्माकं भ्रातृराज्यापहारिणाम्।।

काञ्चुकीयः - अथ..............

रामः - अतः परं न मातुः परिवादं श्रोतुमिच्छामि। महाराजस्य वृत्तान्तस्तावद-भिधीयताम्।

काञ्चुकीयः - ततस्तदानीम्,

शोकादवचनाद् राज्ञा हस्तेनैव विसर्जितः।
किमप्यभिमतं मन्ये मोहं च नृपतिर्गतः।।5।।

रामः - कथं मोहमुपगतः।

(नेपथ्ये)

कथं कथं मोहमुपगत इति।
यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयाम्।।

रामः - (आकर्ण्य पुरतो विलोक्य)
अक्षोभ्यः क्षोभितः केन लक्ष्मणो धैर्यसागरः।
येन रुष्टेन पश्यामि शताकीर्णमिवाग्रतः।।6।।

(ततः प्रविशति धनुर्बाणपाणिर्लक्ष्मणः)

लक्ष्मणः - (सक्रोधम्) **कथं कथं मोहमुपगत इति।**
यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयां
स्वजननिभृतः सर्वोप्येवं मृदुः परिभूयते।
अथ न रुचितं मुञ्च त्वं मामहं कृतनिश्चयो
युवतिरहितं लोकं कर्तुं यतश्छलिता वयम्।।7।।

सीता - **आर्यपुत्र! रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम्। अपूर्वः खल्वस्यायासः।**

रामः - **सुमित्रामातः! किमिदम्?**

लक्ष्मणः - **कथं कथं किमिदं नाम।**

क्रमप्राप्ते हृते राज्ये भुवि शोच्यासने नृपे।

इदानीमपि सन्देहः किं क्षमा निर्मनस्विता।।8।।

रामः - **सुमित्रामातः! अस्मद्राज्यभ्रंशो भवत उद्योगं जनयति। आः अपण्डितः खलु भवान्।**

भरतो वा भवेद् राजा वयं वा ननु तत् समम्।

यदि तेऽस्ति धनुश्श्लाघा स राजा परिपाल्यताम्।।9।।

लक्ष्मणः - **न शक्नोमि रोषं धारयितुम्। भवतु भवतु। गच्छामस्तावत्।** (प्रस्थितः)

रामः - **त्रैलोक्यं दग्धुकामेव ललाटपुटसंस्थिता।**

भृकुटिर्लक्ष्मणस्यैषा नियतीव व्यवस्थिता।।10।।

सुमित्रामातः! इतस्तावत्।

लक्ष्मणः - **आर्य! अयमस्मि।।**

रामः - **भवतः स्थैर्यमुत्पादयता मयैवमभिहितम्। उच्यतामिदीनाम्।**

ताते धनुर्न मयि सत्यमवेक्ष्यमाणे

मुञ्चानि मातरि शरं स्वधनं हरन्त्याम्।

दोषेषु बाह्यमनुजं भरतं हनानि

किं रोषणाय रुचिरं त्रिषु पातकेषु।।11।।

लक्ष्मणः - (सवाष्पम्) **हा धिक्! अस्मानविज्ञायोपालभसे।**

यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे न मनोरथः।

वर्षाणि किल वस्तव्यं चतुर्दश वने त्वया।।12।।

रामः	**-**	**अत्र मोहमुपगतस्तत्रभवान्। हन्त! निवेदितमप्रभुत्वम्। मैथिलि!**
		मङ्गलार्थेऽनया दत्तान् वल्कलांस्तावदानय।
		करोम्यन्यैर्नृपैर्धर्मं नैवाप्तं नोपपादितम्।।13।।
सीता	**-**	**गृह्णात्वार्यपुत्रः।**
रामः	**-**	**मैथिलि! किं व्यवसितम्?**
सीता	**-**	**ननु सहधर्मचारिणी खल्वहम्।**
रामः	**-**	**मयैकाकिना किल गन्तव्यम्।**
सीता	**-**	**अतो नु खल्वनुगच्छामि।**
रामः	**-**	**वने खलु वस्तव्यम्।**
सीता	**-**	**तत् खलु मे प्रासादः।**
रामः	**-**	**श्वश्रूश्वशुरशुश्रूषापि च ते निर्वर्तयितव्या।**
सीता	**-**	**एनामुद्दिश्य देवतानां प्रणामः क्रियते।**
रामः	**-**	**लक्ष्मण! वार्यतामियम्।**
लक्ष्मणः	**-**	**आर्य! नोत्सहे श्लाघनीये काले वारयितुमत्र भवतीम्।**

शब्दार्थाः

मातुराज्ञा	-	मातुः + आज्ञा, मातुरादेशः = माता की आज्ञा।
गरीयसी	-	श्रेष्ठा, श्रेष्ठ है।
परित्रायताम्	-	रक्ष्यताम्, बचाओ।
परित्रातव्यः	-	रक्षणीयः रक्षा के योग्य।
वक्तव्यम्	-	कथयितव्यम्, कहना चाहिए।
एकशरीरसंक्षिप्ता	-	एकमात्रस्थिता, एक शरीर में स्थित।
स्वजनात्	-	स्वसदस्यात्, अपने (ही) व्यक्ति से।
प्रतीकारः	-	निवारणम्, निवारण (रोकथाम)।

शरीरेऽरिः	-	शरीरे + अरिः।
शरीरे	-	देहे, शरीर में।
अरिः	-	शत्रुः, शत्रु।
प्रहरति	-	प्रहारं करोति, प्रहार करता है।
उत्पादयिष्यति	-	जनयिष्यति, उत्पन्न करेगा।
तत्रभवत्याः	-	सम्मानयोग्यायाः, आदरणीया का/के।
कैकेय्याः	-	कैकेयी का।
उदर्केण	-	परिणाम वाले से।
गुणेन	-	गुण से।
श्रूयताम्	-	आकर्ण्यताम्, सुनिए।
शक्रसमः	-	इन्द्रतुल्यः, इन्द्र के समान।
स्पृहा	-	कामना।
आर्जवम्	-	सारल्यम्, सीधापन।
उपनिक्षेप्तुं	-	रक्षितुम्, रखना।
निवृत्तः	-	अवरुद्ध, रुक गया।
पितृपरवत्ता	-	पितुरधीनता, पिता की अधीनता।
अनाहूतोपसृतया	-	अनाहूतप्राप्तया न + आहूतया + उपसृतया बिना बुलाए समीप पहुँची हुई।
इत्युक्तम्	-	इति निगदितम्, इति उक्तम् = ऐसा कहा।
अत्राप्यलोभः	-	अत्रापि लोभाभावः, अत्र + अपि + अलोभः, इसमें भी लोभ नहीं।
खल्वस्मत्पक्षपातादेव	-	खलु + अस्मत् + पक्षपाताद् + एव, पक्षपात से ही।
नार्थमवेक्षते	-	न + अर्थम् + अवेक्षते (पश्यति) वास्तविकता को नहीं देखता यथार्थं न पश्यति।
विपणितम्	-	दातुं प्रतिज्ञातम्, देने के निमित्त।
पुत्रार्थे	-	पुत्रनिमित्तम्, पुत्र के निमित्त।
याच्यते	-	अर्थ्यते, माँगा जा रहा है।

लोभोऽत्र	-	लोभः + अत्र = यहाँ लोभ।
नास्माकम्	-	न + अस्माकम् = हमारा नहीं।
भ्रातृराज्यापहारिणम्	-	भ्रातृराज्यस्य अपहारिणम् भाई के राज्य का अपहरण करने वालों का।
परिवादम्	-	निन्दाम्, निन्दा को।
वृत्तान्तः	-	वार्ता, समाचार।
अभिधीयताम्	-	कथ्यताम्, कहिए।
तावत्	-	तो, अभी।
शोकात्	-	दुःखात्, दुःख से।
अवचनात्	-	वचन राहित्यात्, न कहने से।
हस्तेनैव	-	हस्तेन + एव, करेणैव, हाथ से ही (इशारे से ही)।
विसर्जितः	-	निवर्तितः, विदा किया।
किमपि	-	किम् + अपि, कोई।
अभिमतम्	-	अभीष्टम्, अभीष्ट।
मन्ये	-	स्वीकरोमि, मैं (ऐसा) मानता हूँ।
मोहम्	-	मूर्च्छाम्, मूर्च्छा को।
गतः	-	प्राप्तः, प्राप्त हुआ।
उपगतः	-	अधिगतः, प्राप्त हुआ।
अक्षोभ्यः	-	क्षुब्ध न होने वाला।
धैर्यसागरः	-	धैर्यसमुद्रः, धैर्य का समुद्र।
रुष्टेन	-	क्रुद्धेन, क्रुद्ध से।
शताकीर्णम्	-	सैक\ड़ों लोगों से व्याप्त।
सहसे	-	सहनं करोषि, सहन करते हैं।
स्वजननिभृतः	-	आत्मीयजनों के प्रति विनययुक्त।
सर्वोऽप्येवम्	-	सर्वः + अपि + एवम्, सब ही ऐसा।
मृदुः	-	कोमल।

परिभूयते	-	तिरस्क्रियते, तिरस्कार को प्राप्त होता है।
कृतनिश्चयः	-	विहितनिश्चयः, कर लिया है निश्चय जिसने।
युवतिरहितम्	-	स्त्रीरहितम्, युवतियों से रहित।
छलिताः	-	वञ्चिताः, ठगाये गये।
अपूर्वः खल्वस्यायासः	-	खलु + अस्य + आयासः, इसका प्रयास निश्चय ही आश्चर्यजनक है।
क्रमप्राप्ते	-	क्रमशः प्राप्त।
शोच्यासने	-	शोकयुक्ते आसने शोक योग्य आसन पर।
निर्मनस्विता	-	निस्तेजस्विता, हृदयशून्यता।
अस्मद्राज्यभ्रंशः	-	हमारे राज्य का विनाश होगा।
धनुःश्लाघा	-	धनुर्विद्या में आत्मस्तुति।
परिपाल्यताम्	-	रक्षा कीजिए।
दग्धुकामेव	-	दग्धुकामा + इव, भस्मसात्कर्तुकामा, मानों जलाने की इच्छा वाली।
स्थैर्यम्	-	स्थिरता।
उत्पादयता	-	उत्पन्न करने वाले के द्वारा।
मयैवमभिहितम्	-	मया + एवम् + अभिहितम्, मैंने ऐसा कहा।
अविज्ञायोपालभसे	-	अविज्ञाय + उपालभसे, विना जाने उपालम्भ देते हो।
निवेदितम्	-	कथितम्, प्रकट कर दिया।
अप्रभुत्वम्	-	असामर्थ्य को।
नैवाप्तम्	-	न + एव + आप्तम्, नैव प्राप्तम्, प्राप्त नहीं किया।
नोपपादितम्	-	न उपपादितम्, न सम्पादितम्, नहीं किया।
गृहणात्वार्यपुत्रः	-	गृहणातु + आर्यपुत्रः = आर्य पुत्र स्वीकार करें।
आर्यपुत्रः	-	पति के लिए सम्बोधन।
मयैकाकिना	-	मया + एकाकिना, मेरे अकेले के द्वारा।
निर्वर्तयितव्या	-	निवर्तनीया, करनी चाहिए।
वार्यताम्	-	निवार्यताम्, रोको।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) एकशरीरसंक्षिप्ता का रक्षितव्या?

(ख) शरीरे कः प्रहरति?

(ग) स्वजनः कुत्र प्रहरति?

(घ) कैकेय्याः भर्ता केन समः आसीत्?

(ङ) कः मातुः परिवादं श्रोतुं न इच्छति?

(च) केन लोकं युवतिरहितं कर्तुं निश्चयः कृतः?

(छ) प्रतिमानाटकस्य रचयिता कः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) रामस्य अभिषेकः कथं निवृत्तः?

(ख) दशरथस्य मोहं श्रुत्वा लक्ष्मणेन रोषेण किम् उक्तम्?

(ग) लक्ष्मणेन किं कर्तुं निश्चयः कृतः?

(घ) रामेण त्रीणि पातकानि कानि उक्तानि?

(ङ) रामः लक्ष्मणस्य रोषं कथं प्रतिपादयति?

3. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) <u>मया</u> एकाकिना गन्तव्यम्।

(ख) <u>दोषेषु</u> बाह्यम् अनुजं भरतं हनानि।

(ग) <u>राज्ञा</u> हस्तेन एव विसर्जितः।

(घ) <u>पार्थिवस्य</u> वनगमननिवृत्तिः भविष्यति।

(ङ) <u>शरीरे</u> अरिः प्रहरति।

4. अधोलिखितेषु संवादेषु कः कं प्रति कथयति इति लिखत-

संवादः	कः कथयति?	कं प्रति कथयति
(क) एकशरीरसंक्षिप्ता पृथिवी रक्षितव्या।	....	....
(ख) अलमुपहतासु स्त्रीबुद्धिषु स्वमार्जवमुपनिक्षेप्तुम्	....	....

(ग) नवनृपतिविमर्शे नास्ति शङ्का प्रजानाम् ....
(घ) रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम् ....
(ङ) न शक्नोमि रोषं धारयितुम् ....
(च) एनामुद्दिश्य देवतानां प्रणामः क्रियते ....
(छ) यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे न मनोरथः..................... ....

5. पाठमाश्रित्य 'रामस्य' 'लक्ष्मणस्य' च चारित्रिक-वैशिष्ट्यं हिन्दी/अंग्रेजी/संस्कृत भाषया लिखत-

6. पाठात् चित्वा अव्ययपदानि लिखत- उदाहरणानि ननु, तत्र ....।

7. अधोलिखितेषु पदेषु प्रकृति-प्रत्ययौ पृथक् कृत्वा लिखत-

परित्रातव्यः, वक्तव्यम्, रक्षितव्या, भवितव्यम्, पुत्रवती, श्रोतुम्, विसर्जितः, गतः, क्षोभितः, धारयितुम्।

8. अधोलिखितानां पदानां संस्कृत-वाक्येषु प्रयोगः करणीयः-

शरीरे, प्रहरति, भर्ता, अभिषेकः, पार्थिवस्य, प्रजानाम्, हस्तेन, धैर्यसागरः, पश्यामि, करेणुः, गन्तव्यम्।

9. अधोलिखितानां स्वभाषया भावार्थं लिखत-

(क) शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा।
(ख) नवनृपतिविमर्शे नास्ति शङ्का प्रजानाम्।
(ग) यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयाम्।
(घ) यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे न मनोरथः।

10. अधोलिखितपदेषु सन्धिच्छेदः कार्यः-

रक्षितव्येति, गुणेनात्र, शरीरेऽरिः, स्वजनस्तथा, येनाकार्यम्, खल्वस्मत्, किमप्यभिमतम् हस्तेनैव, दग्धुकामेव।

योग्यताविस्तारः

'काव्येषु नाटकं रम्यम्' इत्यनुभूय महाकवि-भासेन रमणीयत्वं प्रतिपादयता नाटकानि एव रचितानि। नाटकीयायाः परम्परायाः प्रवर्तनं भासादेव प्राप्यते। यद्यपि भासस्य प्रामाणिकं जीवन-वृत्तं नैवोपलभ्यते तथापि केचन विद्वांसः महाकविम् उज्जयिनीकम् मन्यन्ते। भासनाटकचक्रे-स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, प्रतिमानाटकम्, अविमारकम्, बालचरितम्, अभिषेकम्, पञ्चरात्रम्, मध्यमव्यायोगः, ऊरुभङ्गम्, दूतघटोत्कचम्, कर्णभारम्, दूतवाक्यम्, चारुदत्तम् च त्रयोदश नाटकानि गण्यन्ते।

प्रतिमानाटकम् - एतन्नाटकम् सप्ताङ्कपरिमितम् विद्यते। अस्मिन् रामवनवासादारभ्य रावणवधपर्यन्तं कथा वर्णिता वर्तते। मातुलगृहात् निवर्तमानः भरतः यदा मार्गे अयोध्यायाः पार्श्वे प्रतिमा-मन्दिरे स्वदिवङ्गतेषु पूर्वजेषु महाराजस्य दशरथस्य प्रतिमां पश्यति तदा सः पितुः मरणविषये जानाति। तदैव रामरावणयोः युद्धस्य सन्देशः प्राप्यते, भरतः रामस्य सहायतार्थं सैन्यबलं प्रेषयति। प्रतिमया नाटकेन पितुः मरणस्य सूचनायाः कारणात् अस्य नाटकस्याभिधानंम् "प्रतिमानाटकम्" जातम्।

12077CH04

चतुर्थः पाठः

प्रजानुरञ्जको नृपः

प्रस्तुत पाठ महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश के प्रथम सर्ग से लिया गया है। इन आरम्भिक श्लोकों में कालिदास महान् रघुकुल के राजाओं के गुणों के वर्णन के माध्यम से संसार को यह बताने की चेष्टा करते हैं कि शासकों में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? राजा का मुख्य धर्म प्रजा का अनुरञ्जन करना है। राजा को प्रजा के कल्याण के लिए ही प्रजा से कर लेकर कोष एकत्रित करना चाहिये। कर-ग्रहण करने का उद्देश्य आपत्ति आने पर प्रजा का कष्टनिवारण करना होता है। राजा को विद्वान्, सत्यवादी, इन्द्रियनिग्रही तथा प्रजापालक होना चाहिए। इस संसार में वे ही राजवंश चिरकाल तक राज्य करते हैं, जिनमें रघुवंशी राजाओं के समान गुण पाए जाते हैं। कालिदास इस के माध्यम से न केवल भारत के अपितु विश्व के शासकों के समक्ष ये अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते हैं। प्रजापालन, प्रजानुरञ्जन ही शासक का प्रमुख धर्म है-यह ध्वनि इससे प्रकट होती है।

त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम् ।।1।।

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ।।2।।

रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन्।
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः ।।3।।

वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव ।।4।।

तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इव राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव ।।5।।

आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।
आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः ।।6।।

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः ।।7।।

ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव ।।8।।

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः ।।9।।

द्वेष्योऽपि सम्मतः शिष्टस्तस्यार्तस्य यथौषधम्।
त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता ।।10।।

स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागराम्।
अनन्यशासनामुर्वीं शशासैकपुरीमिव ।।11।।

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

सम्भृतार्थानाम्	-	सम्भृतः अर्थः यैः तेषाम् बहुव्रीहि सञ्चिद्धनानाम्, धन इकट्ठा करने वाले (रघुवंशियों का)।
मितभाषिणाम्	-	मितं भाषन्ते ये ते तेषाम्, उपपद तत्पुरुष, सीमितभाषणकर्तधणाम्, सीमित बोलने वाले (रघुवंशियों का)।
विजगीषूणाम्	-	वि + जि + सन् + उ, ष.ब.व., विजयस्य-इच्छुकानाम्, विजय की इच्छा रखने वाले (रघुवंशियों का)।
गृहमेधिनाम्	-	गृहे मेधन्ते तेषाम्, उपपद तत्पुरुष, दारपरिग्रहाणाम्, विवाह करने वाले (रघुवंशियों का)।
विषयैषिणाम्	-	विषयान् इच्छन्ति तेषाम्, उपपद तत्पुरुष, भोगाभिलाषिणां, भोग की इच्छा रखने वाले (रघुवंशियों का)।
तनुत्यजाम्	-	तनुं त्यजन्ति तेषाम्, उपपद तत्पुरुष, देहत्यागिनाम्, शरीर का त्याग करने वाले (रघुवंशियों का)।
अन्वयम्	-	वंशम्, वंश के विषय में।
तनुवाग्विभवः	-	तनु वाक् एव विभवः यस्य सः बहुव्रीहि, स्वल्पवाणीप्रसारः, वाणी का थो\ड़ा वैभव।
चापलाय	-	चपलस्यभावः, चपल + अण्, चापलम्, चपलता के लिए।
प्रचोदितः	-	प्र + चुद् + क्त पु.प्र.ए.व., प्रेरितः, प्रेरणा किया हुआ।
मनीषिणाम्	-	मनषः ईषिणः मनीषिणः तेषाम् विदुषाम्, विद्वानों में।
महीक्षिताम्	-	महीं क्षियन्ति इति महीक्षितः तेषाम् क्षितीश्वराणाम्, राजाओं में।
प्रणवः	-	ओङ्कारः, ओऽम् शब्द।
छन्दसाम्	-	वेदानाम्, वेदों का।
अन्वये	-	वंशे, वंश में।

शुद्धिमति	-	शुद्धि + मतुप् पु. सप्तमी ए.व., शुद्धिरस्यास्ति इति शुद्धिमान् तस्मिन् (पवित्र वंश में)।
प्रसूतः	-	प्र + सू + क्त, जातः, उत्पन्न हुआ।
राजेन्दुः	-	राज्ञाम् इन्दुः, षष्ठी तत्पुरुष पु.प्र. ए.व., राजश्रेष्ठ, राजाओं में श्रेष्ठ।
इन्दुः	-	चन्द्रमाः, चन्द्रमा।
क्षीरनिधौ	-	क्षीरसमुद्रे, क्षीर सागर में।
आकारसदृशप्रज्ञः	-	आकारेण सदृशी प्रज्ञा यस्य सः, आकार के समान बुद्धि वाले।
प्रज्ञया सदृशागमः	-	प्रज्ञया सदृशाः आगमाः यस्य सः, बहुव्रीहि, प्रज्ञया अनुरूपः शास्त्रपरिश्रमः, बुद्धि के अनुरूप शास्त्र का अभ्यास।
आगमैः सदृशारम्भः	-	शास्त्रैः सदृश आरम्भः, शास्त्रों के अनुसार (कर्म) आचरण करने वाला।
आरम्भसदृशोदयः	-	आरम्भेण सदृशः उदयः यस्य सः, बहुव्रीहि, प्रारम्भ-सदृशसिद्धियुक्तः, प्रारम्भ के समान फल की सिद्धि वाला।
भूत्यर्थम्	-	भूत्यै इति, अर्थ के योग मे चतुर्थी तत्पुरुष, वृद्ध्यर्थम्, (उन्नति) भलाई के लिए।
बलिम्	-	करम्, कर को (टैक्स को)।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुम्	-	सहस्रधा दातुम्, हजार गुना देने के लिए।
उत्स्रष्टुम्	-	उद् + सृज् + तुमुन्, देने के लिए।
आदत्ते	-	आ + दा, लट् प्र.पु. ए.व. गृह्णाति, ग्रहण करता है।
श्लाघाविपर्ययः	-	श्लाघाया विपर्ययः, षष्ठी तत्पुरुष, विकत्थनायाभावः, अपनी बड़ाई न करने वाला।
गुणानुबन्धित्वात्	-	गुणान् अनुबध्नन्ति, गुणानुबन्धिनः, तेषां भावः, तस्मात्, ज्ञानादिगुणानुसारित्वात्, ज्ञानादि गुणों के अनुकरण करने से।
सप्रसवा इव	-	सोदरा इव, सहोदर के समान।
विनयाधानात्	-	विनम्रताशिक्षणात्, विनम्रता आदि की शिक्षा देने से।

रक्षणात्	-	त्राणात्, रक्षा करने के कारण से।
भरणात्	-	पोषणात्, भरण-पोषण के हेतु से।
जन्महेतवः	-	जन्मनः एव हेतवः, जन्ममात्रकर्त्तारः, जन्म मात्र देने के कारण।
उरगक्षता	-	उरगेण क्षता, सर्प, साँप से काटी गई।
अङ्गलीव	-	अंगुली के समान।
वेलावप्रवलयां	-	वेला एव वप्रवलयः यस्याः सा तां बहुव्रीहिः, समुद्र-कूलप्राकारायां, समुद्र का किनारा ही जिस नगर की प्रमुख दीवार का परकोटा है।
परिखीकृतसागराम्	-	परितः खाताः परिखाः, परिखाः कृताः सागराः यस्याः सा ताम्, समुद्र की चहरदीवारी को।
अनन्यशासनाम्	-	न अस्ति अन्यस्य शासनं यस्यां सा ताम्, बहुव्रीहिसमासः, न अन्यशासकेन शासिताम्, अन्य राजा के द्वारा शासन न की गई।
उर्वीम्	-	पृथिवीम्, पृथ्वी को।
शशास	-	शासनं कृतवान्, शासन किया।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) केषाम् अन्वयः कालिदासेन विवक्षितः?

(ख) रघुवंशिनः अन्ते केन तनुं त्यजन्ति?

(ग) महीक्षिताम् आद्यः कः आसीत्?

(घ) कासां पितरः केवलं जन्महेतवः?

(ङ) कः प्रियः अपि त्याज्यः?

(च) दिलीपः प्रजानां भूत्यर्थं कम् अग्रहीत्?

(छ) राजेन्दुः दिलीपः रघूणामन्वये क्षीरनिधौ कः इव प्रसूतः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) महाकविकालिदासेन वैवस्वतो मनुः महीक्षितां कीदृशः निगदितः?

(ख) कालिदासः तनुवाग्विभवः सन् अपि तद्गुणैः कथं प्रचोदितः?

(ग) के तं (रघुवंशं) श्रोतुमर्हन्ति?

(घ) दिलीपस्य कार्याणाम् आरम्भः कीदृशः आसीत्?

(ङ) रविः रसं किमर्थम् आदत्ते?

3. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) सः प्रजानामेव भूत्यर्थं बलिम् अग्रहीत्।

(ख) प्रजानां विनयाधानात् सः पिता आसीत्।

(ग) मनीषिणां माननीयः मनुः आसीत्।

(घ) शुद्धिमति अन्वये दिलीपः प्रसूतः।

(ङ) पितरः जन्महेतवः आसन्।

4. अधोलिखितानां भावार्थं हिन्दी/आंग्ल/संस्कृत स्वभाषया लिखत-

(क) प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।

(ख) आगमैः सदृशारम्भः आरम्भसदृशोदयः।

(ग) स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः।

(घ) अनन्यशासनामुर्वीं शशासैकपुरीमिव।

5. अधोलिखितेषु विपरीतार्थमेलनं कुरुत-

यौवने	चपलताम्
मौनम्	शासनम् न अकरोत्
त्याज्यः	अक्षता
शशास	ग्राह्यः
क्षता	वार्धके

6. अधोलिखितेषु प्रकृति-प्रत्यय-विभागः क्रियताम्-

आगत्य, उत्स्रष्टुम्, सम्मतः, त्याज्यः, शिष्टः

7. सन्धिम् सन्धि-विच्छेदं वा कुरुत-

तनुवाग्विभवोऽपि, योगेनान्ते, ताभ्यः+बलिम्, शशासैकपुरीमिव।

8. अधोलिखितस्य श्लोकद्वयस्य अन्वयं कुरुत-

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः।।

स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागराम्।
अनन्यशासनामुर्वीं शशासैकपुरीमिव।।

9. अधोलिखितेषु विशेषण-विशेष्ययोः मेलनं कुरुत-

माननीयः	अङ्गुली
राजेन्दुः	आर्तस्य
जन्महेतवः	मनुः
उरगक्षता	दिलीपः
तस्य	पितरः

योग्यताविस्तारः

'रघुवंशम्' महाकविकालिदासस्य रचनासु महाकाव्येषु गण्यते। साहित्यदर्पणे महाकाव्यस्य लक्षणमिदं प्राप्यते-'सर्गबन्धो महाकाव्यम्' एतस्मिन् देवः, उदात्तगुणयुक्तः, उच्चकुलोत्पन्नः क्षत्रियो वा नायको भवेत्। एकस्मिन् वंशे समुत्पन्नाः बहवो राजानोऽपि नायकाः भवितुम् अर्हन्ति। रसेषु शृङ्गारो, वीरः शान्तो वा रसः प्राधान्येन, शेषरसाः अङ्गरूपेण च प्रयुज्यन्ते। चतुर्विधपुरुषार्थानां धर्मार्थकाममोक्षाणां लाभः महाकाव्यस्य फलरूपेण स्वीकृतः। महाकाव्यस्य एकस्मिन् सर्गे एकस्यैव छन्दसः प्रयोगः, सर्गान्ते च छन्दसि परिवर्तनं इति महाकाव्यस्य लक्षणे निर्दिष्टम्। एतत् सर्वं रघुवंशमहाकाव्ये प्राप्यते। अनेन महाकविना प्रकृतेः चित्रणं स्वीये महाकाव्ये मुक्तभावेन मूर्तरूपेण कृतम्। अत्र आसूर्यात् अग्निवर्णं यावत् नृपाणां ग्राह्यगुणानां त्याज्यदोषाणां चोल्लेखः विद्यते। महाकाव्यमिदम् एकोनविंशतिसर्गेषु निबद्धमस्ति। कालिदासस्य द्वे महाकाव्ये रघुवंशम् कुमारसम्भवम्, नाटकत्रयं मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् खण्डकाव्येषु च मेघदूतम्, ऋतुसंहारञ्च विश्रुतानि।

12077CH05

पञ्चमः पाठः

दौवारिकस्य निष्ठा

प्रस्तुत पाठ शिवराजविजय नामक संस्कृत भाषा के प्रथम उपन्यास से लिया गया है, जिसके लेखक पं. अम्बिकादत्तव्यास हैं। व्यास जी का जन्म उस समय हुआ, जब भारत पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम असफल हो चुका था, जनता निराश हो चुकी थी, अंग्रेज़ों के अत्याचार बढ़ते जा रहे थे। ऐसे समय में स्वतन्त्रता-प्राप्ति की अलख जगाने के लिए जहाँ राजनैतिक मंच पर नेता सक्रिय थे, वहीं तत्कालीन लेखक भी इस कार्य में पीछे नहीं रहे। बंगालीभाषा में लिखे गए उपन्यासों की लोकप्रियता से प्रेरणा प्राप्त कर अम्बिकादत्त व्यास ने संस्कृतभाषा में शिवराजविजय नामक उपन्यास की रचना की। इसमें लेखक ने शिवाजी एवम् औरंगजेब के संघर्ष को आधार बनाया है। प्रस्तुत संपादित पाठ में दुर्ग के द्वारपाल की ईमानदारी तथा स्वामिभक्ति की महत्ता प्रतिपादित करते हुए बड़े ही नाटकीय ढंग से उसकी परीक्षा प्रदर्शित की गई है। इस पाठ के संवाद बड़े ही रोचक हैं तथा पाठक की उत्सुकता को सतत अक्षुण्ण बनाए रखते हैं।

संवृत्ते किञ्चिदन्धकारे भुशुण्डीं स्कन्धे निधाय निपुणं निरीक्षमाणः, आगत-प्रत्यागतं च विदधानः, प्रतापदुर्गदौवारिकः कस्यापि पादक्षेपध्वनिमिवाश्रौषीत्। ततः स्थिरीभूय

पुरतः पश्यन् सत्यपि दीपप्रकाशे कमप्यनवलोकयन् गम्भीरस्वरेणैवम् अवादीत्-"कः कोऽत्र भोः? कः कोऽत्र भोः?" इति।

अथ क्षणानन्तरं पुनः स एव पादध्वनिरश्रावीति भूयः साक्षेपमवोचत्-"क एष मामनुत्तरयन् मुमूर्षुः समायाति बधिरः?

ततो "दौवारिक! शान्तो भव किमिति व्यर्थं मुमूर्षुरिति बधिर इति च वदसि?" इति वक्तारमपश्यतैवाऽऽकर्णि मन्द्रस्वरमेदुरा वाणी। अथ "तत् किं नाज्ञायि अद्यापि भवता प्रभुवर्याणामादेशो यद् दौवारिकेण प्रहरिणा वा त्रिःपृष्टोऽपि प्रत्युत्तरमददद् हन्तव्यः इति" इत्येवं भाषमाणेन द्वाःस्थेन क्षम्यतामेष आगच्छामि, आगत्य च निखिलं निवेदयामि" इति कथयन् द्वादशवर्षेण केनापि भिक्षावटुनानुगम्यमानः कोऽपि काषायवासाः धृततुम्बीपात्रः भव्यमूर्तिः संन्यासी दृष्टः। ततस्तयोरेवम् अभूदालापः-

संन्यासी - कथमस्मान् संन्यासिनोऽपि कठोरभाषणैस्तिरस्करोषि?

दौवारिकः - भगवन्! संन्यासी तुरीयाश्रमसेवीति प्रणम्यते, परन्तु प्रभूणामाज्ञामुल्लङ्घ्य निजपरिचयमददेवाऽऽयातीत्याक्रुश्यते।

संन्यासी - सत्यं क्षान्तोऽयमपराधः, परं संन्यासिनो ब्रह्मचारिणः पण्डिताः, स्त्रियो बालाश्च न किमपि प्रष्टव्याः। आत्मानम् अपरिचाययन्तोऽपि प्रवेष्टव्याः।

दौवारिकः - संन्यासिन्! संन्यासिन्! बहूक्तम्, विरम न वयं दौवारिका ब्रह्मणोऽप्याज्ञां प्रतीक्षामहे, केवलं महाराजशिववीरस्याज्ञां वयं शिरसा वहामः। प्राह्णे महाराजस्य सन्ध्योपासनसमये भवादृशानां प्रवेशसमयो भवति, न तु रात्रौ।

संन्यासी - तत् किं कोऽपि न प्रविशति रात्रौ?

दौवारिकः - (साक्षेपम्) **कोऽपि कथं न प्रविशति? परिचिता वा, प्राप्तपरिचयपत्रा वा, आहूता वा प्रविशन्ति, न तु ये केऽपि समागता भवादृशाः।**

संन्यासी - दौवारिक! इत आयाहि किमपि कर्णे कथयिष्यामि।

दौवारिकः - (तथा कृत्वा) **कथ्यताम्।**

संन्यासी - यदि त्वं मां प्रविशन्तं न प्रतिरुन्धेः तदधुनैव परिष्कृतपारदभस्म तुभ्यं

ददयाम् यथा त्वं गुञ्जामात्रेणापि द्वापञ्चाशत्संख्याकतुलापरिमितं ताम्रं सुवर्णं विधातुं शक्नुयाः।

दौवारिकः - **हंहो, कपटसंन्यासिन्! कथं विश्वासघातं स्वामिवञ्चनं च शिक्षयसि? ते केचनान्ये भवन्ति नीचा ये उत्कोचलोभेन स्वामिनं वञ्चयित्वा आत्मानम् अन्धतमसि पातयन्ति न वयं शिवगणास्तादृशाः।** (संन्यासिनो हस्तं धृत्वा) **इतस्तु सत्यं कथय कस्त्वम्? कुत आयातः? केन वा प्रेषितः?**

संन्यासी - **अहं तु त्वां कस्यापि देशद्रोहिणो गूढचरं मन्ये।** (हस्तमाकृष्य) **तदागच्छ दुर्गाध्यक्षसमीपे, स एवाभिज्ञाय त्वया यथोचितं व्यवहरिष्यति।**

ततः संन्यासी तु 'त्यज! नाहं पुनरायास्यामि, नाहं पुनरेवं कथयिष्यामि, महाशयोऽसि दयस्व इति बहुधा अकथयत्, दौवारिकस्तु तमाकृष्य नयन्नेव प्रचलितः।

अथ दीपस्य समीपमागत्य संन्यासिनोक्तम् "दौवारिक! न मां प्रत्यभिजानासि।" ततः पुनर्निपुणं निरीक्षमाणो दौवारिकस्तं पर्यचिनोत्- 'आः! कथं श्रीमान् गौरसिंहः? आर्य! क्षम्यतामनुचितव्यवहार एतस्य ग्राम्यवराकस्य। तदवधार्य तस्य पृष्ठे हस्तं विन्यस्यन् संन्यासिरूपो गौरसिंहः समवोचत्-

"दौवारिक! मया दृढं परीक्षितोऽसि, यथायोग्य एव पदे नियुक्तोऽसि, त्वादृशा एव वस्तुतः पुरस्कार-भाजनानि भवन्ति, लोकद्वयं च विजयन्ते।"

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

संवृत्ते	-	होने पर।
किञ्चिदन्धकारे	-	किञ्चित् + अन्धकारे, कुछ अँधेरा (होने पर)।
भुशुण्डीम्	-	बन्दूक को।
स्कन्धे	-	कन्धे पर।
निधाय	-	रखकर (नि उपसर्ग धा धातु, ल्यप् प्रत्यय)।
निपुणम्	-	भली-भाँति।

निरीक्षमाणः	-	देखते हुए (नि उपसर्ग इं□क्ष् धातु, शानच् प्रत्यय)।
आगत-प्रत्यागतं	-	आने-जाने वालों का।
विदधानः	-	अच्छी तरह जानते-समझते हुए।
प्रतापदुर्गदौवारिकः	-	प्रतापदुर्ग का द्वारपाल (प्रतापदुर्गस्य दौवारिकः)।
कस्यापि	-	किसी के (कस्य + अपि)।
पादक्षेपध्वनिमिवाश्रौषीत्	-	पादक्षेपध्वनिम् + इव + अश्रौषीत् (लुङ् लकार प्र.पु.एकवचन), पादानाम् क्षेपस्य ध्वनिम् पादक्षेपध्वनिम्, पैरों के रखने जैसी आवाज को सुना।
ततः	-	तब (वहां से)।
स्थिरीभूय	-	स्थिर होकर (चौकन्ना होकर)।
पुरतः	-	आगे।
पश्यन्	-	देखते हुए (दृश् धातु शतृ प्रत्यय)।
सत्यपि	-	सति + अपि (की स्थिति में)।
दीपप्रकाशे	-	दीपानाम् प्रकाशे, दीप के प्रकाश में।
कमप्यनवलोकयन्	-	कम् + अपि + अनवलोकयन्, किसी को न देखते हुए।
अवादीत्	-	बोला।
कः कोऽत्र भोः?	-	कः + कः + अत्र, हे! कौन, कौन है यहाँ?
अथ	-	इसके बाद (फिर)।
क्षणानन्तरम्	-	क्षणस्य अनन्तरम्।
पुनः	-	फिर।
स एव	-	सः + एव, वही।
पादध्वनिरश्रावीति	-	पादध्वनिः + अश्रावि + इति, पदध्वनि सुनी गई।
साक्षेपमवोचत्	-	साक्षेपम् + अवोचत्, डाँटते हुए कहा।
क एष मामनुत्तरयन्	-	कः + एषः + माम् + अनुत्तरयन्, यह कौन मुझे बिना उत्तर दिए।
मुमूर्षुः	-	मृत्यु का इच्छुक।

समायाति	-	चला आ रहा है।
बधिरः	-	बहरा।
दौवारिक	-	हे द्वारपाल।
शान्तो भव	-	शान्तः भव - शान्त होइए।
किमिति	-	किम् + इति, यह क्या।
व्यर्थम्	-	व्यर्थ ही।
वदसि	-	कह रहे हो।
वक्तारमपश्यतैवाऽकर्णि	-	वक्तारम् + अपश्यता + एव + आकर्णि, बोलने वाले को न देखते हुए सुना।
अपश्यता	-	दृश् धातु, शतृ प्रत्यय, तृतीया एकवचन, नञ् अर्थ में, न देखते हुए के द्वारा।
वक्तारम्	-	वक्ता को।
आकर्णि	-	सुना गया।
मन्द्रस्वरमेदुरा वाणी	-	मन्द्रस्वरेण मेदुरा वाणी, गम्भीर स्वर से परिपूर्ण।
नाज्ञायि	-	न + अज्ञायि, नहीं पहचाना गया।
त्रिःपृष्टोऽपि	-	त्रिः पृष्टः + अपि, तीन बार पूछे जाने पर भी।
प्रत्युत्तरमददद्	-	प्रत्युत्तरम् + अददद्, उत्तर न दिए जाने वाला।
हन्तव्यः	-	वध्य है।
इत्येवम्	-	इति + एवम्, इस प्रकार।
भाषमाणेन	-	भाष् धातु, शानच् प्रत्यय, बोलते हुए (के द्वारा)।
द्वाःस्थेन	-	द्वार पर स्थित से, द्वारे स्थितः यः सः तेन।
क्षम्यतामेषः	-	क्षम्यताम् + एषः, क्षमा करें, यह।
भिक्षावटुनानुगम्यमानः	-	भिक्षावटुना + अनुगम्यमानः, भिक्षुक ब्रह्मचारी द्वारा अनुगमन किया जाता हुआ।
काषायवासाः	-	काषायाणि वासांसि धारयति यः सः, काषाय वस्त्र धारी।
ततस्तयोरेवमभूदालापः	-	ततः + तयोः + एवम् + अभूत् + आलापः, तब उन दोनों में इस प्रकार का वार्तालाप

हुआ।

संन्यासिनोऽपि - संन्यासिनः + अपि।

कठोरभाषणैस्तिरस्करोषि - कठोरभाषणैः + तिरस्करोषि, कठोराणि च तानि भाषणानि तैः, कठोर भाषणों से तिरस्कृत कर रहे हो।

तुरीयाश्रमसेवीति - तुरीया + आश्रमसेवी + इति, तुरीयः च असौ आश्रमः, तं सेवते यः सः, चतुर्थ आश्रम का अनुपालन करने वाले।

प्रभूणामाज्ञामुल्ल४य - प्रभूणाम् + आज्ञाम् + उल्ल४य, राजा की आज्ञा का उल्ल४न करके।

निजपरिचयमददेवाऽऽयातीत्याक्रुश्यते - निजपरिचयम् + अददद् + एव + आयाति + इति + आक्रुश्यते, अपना परिचय न देते हुए ही चले आ रहे हो (अतः) क्रोध किया जा रहा है।

क्षान्तोऽयमपराधः - क्षान्तः + अयम् + अपराधः, यह अपराध क्षमा किया गया।

आत्मानमपरिचाययन्तोऽपि - आत्मानम् + अपरिचाययन्तः + अपि, अपना परिचय न दिए जाने पर भी।

प्रवेष्टव्याः - प्र उपसर्ग, विश् धातु णिच् प्रत्यय+तव्यत् प्रत्यय, प्रविष्ट करवा देना चाहिए।

बहूक्तम् - बहु + उक्तम्, बहुत बोल दिया।

प्रवेशसमयः - प्रवेशस्य समयः, प्रवेश का समय।

प्राप्तपरिचयपत्राः - प्राप्तानि परिचयपत्राणि यैः ते जिन्होंने परिचय-पत्र प्राप्त कर लिए हैं।

प्रतिरुन्धेः - रोको।

उत्कोचलोभेन - उत्कोचस्य लोभेन, घूस के लोभ से।

पर्यचिनोत् - पहचान लिया।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) प्रतापदुर्गदौवारिकः कस्य ध्वनिम् इव अश्रौषीत्?

(ख) काषायवासाः धृततुम्बीपात्रः भव्यमूर्तिः इति एते शब्दाः कस्य विशेषणानि सन्ति?

(ग) कः तुरीयाश्रमसेवी अस्ति?

(घ) महाराजस्य सन्ध्योपासनसमयः कदा भवति?

(ङ) के उत्कोचलोभेन स्वामिनं वञ्चयन्ति?

(च) त्यज! नाहं पुनरायास्यामि, नाहं पुनरेवं कथयिष्यामि, महाशयोऽसि, दयस्व इति कः अवदत्?

(छ) दौवारिकस्य निष्ठा केन परीक्षिता?

2. एकवाक्येन उत्तरम् दीयताम्-

(क) रात्रौ के के प्रविशन्ति?

(ख) दीपस्य समीपमागत्य संन्यासिना किम् उक्तम्?

(ग) महाराजं प्रत्यभिज्ञाय दौवारिकः किम् अवदत्?

(घ) कः कम् कठोरभाषणैः तिरस्करोति?

(ङ) 'दौवारिकस्य निष्ठा' अयम् पाठः कस्मात् ग्रन्थात् गृहीतः?

(च) शिवगणाः कीदृशाः आसन्?

(छ) दौवारिकः संन्यासिनम् कम् अमन्यत?

3. प्रश्ननिर्माणम् रेखांकितपदान्याधृत्य कुरुत-

(क) <u>महाराजशिववीरस्य</u> आज्ञां वयं शिरसा वहामः।

(ख) <u>नीचा</u> उत्कोचलोभेन स्वामिनं वञ्चयित्वा आत्मानम् अन्धतमसे पातयन्ति।

(ग) दुर्गाध्यक्षः एव यथोचितम् व्यवहरिष्यति।

(घ) दौवारिकः <u>संन्यासिनम्</u> आकृष्य नयन्नेव प्रचलितः।

(ङ) <u>दौवारिकस्य</u> पृष्ठे हस्तं विन्यस्यन् संन्यासिरूपो गौरसिंहः अवदत्।

(च) दीपस्य समीपमागत्य <u>संन्यासिना</u> उक्तम्।

(छ) <u>संन्यासी</u> तुरीयाश्रमसेवी इति प्रणम्यते।

(ज) प्रतापदुर्गदौवारिकः कस्यापि <u>पादक्षेपध्वनिम्</u> अश्रौषीत्।

4. समासविग्रहः क्रियताम्-

(क) प्रतापदुर्गदौवारिकः
(ख) दीपप्रकाशे
(ग) क्षणानन्तरम्
(घ) पादध्वनिः
(ङ) द्वाःस्थेन
(च) कठोरभाषणैः
(छ) गम्भीरस्वरेण

5. सन्धिच्छेदः क्रियताम्-

(क) किञ्चिदन्धकारे
(ख) शान्तो भव
(ग) अद्यापि
(घ) इत्येवम्
(ङ) कोऽत्र
(च) तदधुनैव
(छ) क्षान्तोऽयमपराधः
(ज) बहूक्तम्

6. उपसर्ग-प्रकृति/प्रकृति-प्रत्यय-विभागं दर्शयत-

(क) निधाय
(ख) प्रत्यागतम्
(ग) विदधानः
(घ) निरीक्षमाणः
(ङ) भाषमाणेन
(च) अभिज्ञाय
(छ) पश्यन्
(ज) अनुत्तरयन्

7. विशेषणं विशेष्येन सह योजयत-

गम्भीरेण	जनः
मुमूर्षुः	गूढचरः
कठोरैः	पारदभस्म
परिष्कृतम्	स्वरेण
कपटी	भाषणैः
उत्कोचलोभी	अभ्यागताः
देशद्रोहिणः	सन्यासिन्
आहूताः	नीचः

योग्यताविस्तारः

लोकोत्तरानन्ददाता प्रबन्धः काव्यनामभाक्।
दृश्यं श्रव्यमिति द्वेधा तत्काव्यं परिकीर्तितम् ।।1।।

काव्यस्य प्रकाराः-गद्यपद्यभेदेन आकारभेदेन च
गद्यं पद्यं तथा गद्यपद्यं श्रव्यमिति त्रिधा।
सन्दर्भग्रन्थभेदेन प्रत्येकं तद् द्विधा भवेत् ।।2।।

अल्पः सन्दर्भ इत्युक्तः पत्रं वाऽपि स्तवो यथा।
ग्रन्थस्तु बृहदाकारो लोके पुस्तकनामभाक् ।।3।।

गद्यैर्विद्योतितं यत् स्याद् गद्यकाव्यं तदीरितम्।
ग्रन्थरूपं तदेवाऽत्र श्रव्यं किञ्चिन्निरूप्यते ।।4।।

उपन्यासपदेनाऽपि तदेव परिकथ्यते।
यथा कादम्बरी यद्वा शिवराजविजयो मम ।।5।।

इतरशुद्धगद्यकाव्यलेखकाः

अस्माकं महामान्या धन्याः सुबन्धु-बाण-दण्डिनो महाकवयो वासवदत्ताकादम्बरीदशकुमारचरितानि सुधामधुराणि सदा सदनुभव्यानि गद्यकाव्यानि विरच्य भारतवर्षं सबहु मानमकुर्वन्

अधोलिखितानां पदानां समानार्थानि पदानि पाठेऽन्वेष्टव्यानि-

टहलकदमी

कौन है उधर

पैरों की आहट, पदचाप

12077CH06

षष्ठः पाठः

सूक्ति-सौरभम्

किसी भी भाषा की सूक्तियाँ उस समाज के मनीषियों द्वारा शताब्दियों तक अनुभूत उनके दैनिक जीवन के अनुभवों को प्रकट करती हैं। ये सूक्तियाँ कलेवर में स्वल्प होते हुए भी अपने में विशाल भाव-गाम्भीर्य को समेटे हुए होती हैं। वस्तुतः इन्हीं सुभाषितों तथा सूक्तियों से ही उस भाषा की समृद्धि द्योतित होती है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक नाना कवियों ने इन में अपने दीर्घकालीन अनुभवों को शब्दबद्ध किया है। चाणक्य, भर्तृहरि, विष्णुशर्मा के सुभाषित जहाँ चिरकाल से प्रसिद्ध रहे हैं, वहीं आधुनिक लेखक भी इससे पीछे नहीं रहे। इस पाठ में प्राचीन एवम् अर्वाचीन दोनों कवियों की चुनी हुई कुछ सूक्तियों को उपनिबद्ध किया गया है। छात्रों को इन सूक्तियों को कण्ठस्थ करना चाहिये। वाद-विवाद, भाषण-प्रतियोगिता तथा दैनिक व्यवहार के लिए सूक्तियाँ नितान्त उपयोगी तथा प्रभावोत्पादक होती हैं।

स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा
विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे
विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।।1।।

(भर्तृहरिः)

रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहु-
र्विद्यावतां वस्तुत एव रूपम्।
अपेक्षया रूपवतां हि विद्या
मानं लभन्तेऽतितरां जगत्याम् ।।2।।

(मङ्गलदेव शास्त्री)

न दुर्जनः सज्जनतामुपैति शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः।
चिरं निमग्नोऽपि सुधा-समुद्रे न मन्दरो मार्दवमभ्युपैति ।।3।।

(भट्टरामनाथ शास्त्री)

कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु यत्नः सुमहान् खलानाम्।
निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव ।।4।।

(महाकवि विल्हण)

उत्साह-सम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदञ्च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ।।5।।

(विष्णुशर्मा)

दीर्घप्रयासेन कृतं हि वस्तु निमेषमात्रेण भजेद् विनाशम्।
कर्तुं कुलालस्य तु वर्षमेकं भेत्तुं हि दण्डस्य मुहूर्तमात्रम् ।।6।।

(सूक्तिमुक्तावली)

आरभेत हि कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः।
कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते ।।7।।

(कस्यचित्)

एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी ।।8।।

(चाणक्यनीतिः)

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः
करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ।।9।।

(चाणक्यनीतिः)

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषापहम् ।।10।।

(वैद्यकीय सुभाषित संग्रह)

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ।।11।।

(हितोपदेश)

अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्रं
पाण्डित्यसम्भृतमतिस्तु मितप्रभाषी।
कांस्यं यथा हि कुरुतेऽतितरां निनादं
तद्वत् सुवर्णमिह नैव करोति नादम् ।।12।।

(सूक्तिः)

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

स्वायत्तम्	-	स्वाधीन।
विधात्रा	-	ईश्वर के द्वारा।
छादनम्	-	आवरण।
सर्वविदाम्	-	सर्वं वेत्ति इति तेषाम्, सब कुछ जानने वालों के।
बुधाः	-	विद्वान् लोग।
आहुः	-	कहते हैं।
जगत्याम्	-	संसार में।

विमुच्य	-	छोड़कर।
खलानाम्	-	दुष्टों का।
निरीक्षते	-	देखता है।
केलिवनम्	-	आमोद-प्रमोद का वन।
क्रमेलकः	-	ऊँट।
व्यसनेषु	-	विपत्तियों में।
असक्तम्	-	न लगा हुआ।
याति	-	जाता है।
प्रयासेन	-	प्रयत्न से।
निमेषमात्रेण	-	क्षण मात्र से।
कुलालस्य	-	कुम्भकार का।
शर्वरी	-	रात।
वेत्ति	-	जानता है।
करी	-	हाथी।
भेषजम्	-	औषधि।
वारि	-	जल।
प्रलपति	-	बकता है।
अजस्रम्	-	निरन्तर।
सम्भृतमतिः	-	निश्चित बुद्धि वाला।
निनादम्	-	आवाज।

सन्धिविच्छेदः

स्वायत्तमेकान्तगुणम्	-	स्वायत्तम् + एकान्त + गुणम्
छादनमज्ञतायाः	-	छादनम् + अज्ञतायाः
मौनमपण्डितानाम्	-	मौनम् + अपण्डितानाम्
बुधास्तदाहुर्विद्यावताम्	-	बुधाः + तद् + आहुः + विद्यावताम्

लभन्तेऽतितराम्	-	लभन्ते + अतितराम्
सज्जनतामुपैति	-	सज्जनताम् + उपैति
सहस्रैरपि	-	सहस्रैः + अपि
निमग्नोऽपि	-	निमग्नः + अपि
मार्दवमभ्युपैति	-	मार्दवम् + अभि + उप + एति
उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रम्	-	उत्साह + सम्पन्नम् + अदीर्घसूत्रम्
व्यसनेष्वसक्तम्	-	व्यसनेषु + असक्तम्
दृढसौहृदञ्च	-	दृढसौहृदम् + च
कर्माण्यारभमाणम्	-	कर्माणि + आरभमाणम्
एकेनापि	-	एकेन + अपि

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) कः कण्टकजालं पश्यति?
   (ख) शर्वरी केन भाति?
   (ग) कः गुणं वेत्ति?
   (घ) अजीर्णे किं भेषजम् अस्ति?
   (ङ) सर्वस्य लोचनं किम् अस्ति?
   (च) कः निरन्तरं प्रलपति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) केषां समाजे अपण्डितानां मौनं विभूषणम्?
   (ख) के सर्वलोकस्य दासाः सन्ति?
   (ग) केन कुलं विभाति?
   (घ) सिंहः केन विभाति?
   (ङ) भोजनान्ते किं विषम्?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) विधात्रा अज्ञतायाः छादनं विनिर्मितम्।
(ख) विद्यावतां विद्या एव रूपम् अस्ति।
(ग) लक्ष्मीः शूरं प्राप्नोति।
(घ) बली बलं वेत्ति।
(ङ) शास्त्रं परोक्षार्थस्य दर्शकम् अस्ति।
(च) कांस्यम् अतितरां निनादं करोति।

4. उचितपदैः सह रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) ये ………… दासाः ते सर्वलोकस्य ………… (भवन्ति)। येषाम् आशा ………… (भवति) तेषां ………… दासायते।

(ख) एकेन अपि ………… साधुना सुपुत्रेण ………… सर्वम् आह्लादितं यथा ………… शर्वरी।

(ग) लक्ष्मीः उत्साह-सम्पन्नम् अदीर्घसूत्रं ………… व्यसनेषु असक्तं ………… कृतज्ञं ……….. च निवासहेतोः स्वयं याति।

5. प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत-

	शब्दः	**प्रत्ययः**	**विभक्तिः**
यथा- रूपवताम्	रूप	मतुप्	षष्ठी
(क) कृतम्	…………	…………	…………
(ख) प्रविश्य	…………	…………	…………
(ग) विमुच्य	…………	…………	…………
(घ) भेत्तुम्	…………	…………	…………
(ङ) कर्तुम्	…………	…………	…………

6. पर्यायवाचिभिः सह मेलनं कुरुत-

यथा- स्वायत्तम्	स्वाधीनम्
(क) विमुच्य	क्षणमात्रम्
(ख) क्रमेलकः	उष्ट्रः

(ग)	याति	परित्यज्य
(घ)	कुलालस्य	रात्रिः
(ङ)	शर्वरी	जानाति
(च)	वेत्ति	कुम्भकारस्य
(छ)	करी	गजः
(ज)	अजस्रम्	निरन्तरम्
(झ)	प्रलपति	कथयति
(ञ)	मुहूर्तमात्रम्	गच्छति

7. विलोमपदैः सह योजयत-

यथा- स्वायत्तम् पराधीनम्

(क)	अज्ञतायाः	सज्जनानाम्
(ख)	अपण्डितानाम्	मूर्खाः
(ग)	बुधाः	अपमानम्
(घ)	मानम्	आयाति
(ङ)	खलानाम्	अकृतज्ञम्
(च)	याति	निराशायाः
(छ)	कृतज्ञम्	विद्वत्तायाः
(ज)	आशायाः	अनासक्तम्
(झ)	आसक्तम्	अकृतम्
(ञ)	कृतम्	अजीर्णे
(ट)	जीर्णे	पण्डितानाम्

8. विशेषणं विशेष्येण सह योजयत

यथा- शूरम् पुरुषम्

(क)	एकेन	कुलम्
(ख)	अल्पज्ञः	सुपुत्रेण
(ग)	सर्वम्	पुरुषः
(घ)	एकम्	यत्नः
(ङ)	सुमहान्	लोकम्

9. कः केन विभाति

(क)	गुणी	चन्द्रेण
(ख)	शर्वरी	गुणेन
(ग)	विद्वान्	बलेन
(घ)	सिंह	सुपुत्रेण
(ङ)	कुलम्	विद्यया

10. अधोलिखितानि पदानि उचितरूपेण संयोज्य वाक्यानि रचयत-

विधात्रा	सर्वविदाम्		अस्ति
लक्ष्मीः	आशायाः	भूषणम्	विभाति
मौनम्	कण्टकजालम्	एव	सन्ति
शर्वरी	शूरम्	सुपुत्रेण	पश्यति
गुणी		तु	शोभते
लोकाः			
क्रमेलकः			विनिर्मितम्
कुलम्	छादनम्	दासाः	भाति
		गुणेन	पश्यति

11. पाठस्य चित्रं दृष्ट्वा उचितां पंक्तिं चित्वा लिखत-

....

....

....

....

योग्यताविस्तारः

भावविस्तारः

1. वसामि नित्यं सुभगे प्रगल्भे
दक्षे नरे कर्मणि वर्तमाने
अक्रोधने देवपरे कृतज्ञे।
जितेन्द्रिये नित्यमुदीर्णसत्त्वे।।

2. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च।।

3. सदा चरति खे भानुः सदा वहति मारुतः।
सदा धत्ते भुवं शेषः सदा धीरोऽविकत्थनः।।

4. रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः।।

12077CH07

सप्तमः पाठः

नैकेनापि समं गता वसुमती

प्रस्तुत पाठ बल्लाल सेन रचित भोजप्रबन्ध के 'भोजराजस्य राज्यप्राप्तिप्रबन्ध' अंश का सम्पादित एवं संक्षिप्त रूपान्तरण है। मनुष्य के मन में जब लोभ छा जाता है, तब वह किसी प्रकार निष्ठुर होकर घृणित से घृणित कार्य करने से नहीं हिचकिचाता यह इस कथानक द्‌वारा प्रतिपादित किया गया है। इस पाठ में भोज के चाचा मुञ्ज, बालक भोज को मरवाने का षड्‌यन्त्र बनाते हैं, परन्तु भोज उस मृत्युकाल में मुञ्ज के नाम एक सन्देश देते हैं, जिसमें मान्धाता, रावण आदि का उदाहरण प्रदर्शित करते हुए संसार की नश्वरता प्रदर्शित की गई है। इस श्लोक को पढ़कर न केवल भोज का वध करने वाले का मन परिवर्तित हो गया, अपितु मुञ्ज को भी वैराग्य आ गया तथा भतीजे के वध से दुःखी होकर प्रायश्चित्तस्वरूप अग्नि में प्रवेश करना चाहता है। परन्तु वत्सराज तथा बुद्‌धिसागर की योजना से भोज पुनः जीवित घोषित कर दिया जाता है। मान्धाता च महीपतिः यह श्लोक संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि के रूप में प्रसिद्‌ध हो गया है।

पुरा धाराराज्ये सिन्धुल-संज्ञो राजा चिरं प्रजाः पर्यपालयत्। तस्य वार्धक्ये भोज इति पुत्रः समजनि। सः यदा पञ्चवार्षिकस्तदा पिता ह्यात्मनो जरां ज्ञात्वा मुख्यामात्यानाहूयानुजं मुञ्जं महाबलमालोक्य पुत्रं च बालं संवीक्ष्य विचारयामास-यद्‌यहं राज्यलक्ष्मीभारधारणसमर्थं सहोदरमपहाय राज्यं पुत्राय प्रयच्छामि, तदा लोकापवादः। अथ वा बालं मे पुत्रं मुञ्जो राज्यलोभाद्‌विषादिना मारयिष्यति तदा दत्तमपि राज्यं वृथा। पुत्रहानिर्वंशोच्छेदश्च इति विचार्य राज्यं मुञ्जाय दत्त्वा तदुत्सङ्गे भोजमात्मानं मुमोच।

ततः क्रमाद् राजनि दिवङ्गते सम्प्राप्तराज्य-सम्पत्तिर्मुञ्जो मुख्यामात्यं बुद्‌धिसागरनामानं व्यापारमुद्रया दूरीकृत्य तत्पदेऽन्यं नियोजयामास। अथ कदाचन सभायां ज्योतिः शास्त्रपारङ्गतः कश्चन ब्राह्मणः समागम्य राजानम् आह - देव! लोकाः मां सर्वज्ञं कथयन्ति। तत्किमपि यथेच्छं पृच्छ।

ततो मुञ्जः प्राह-भोजस्य जन्मपत्रिकां विधेहि इति। विप्रः जन्मपत्रिकां विधाय उक्तवान्-

पञ्चाशत्पञ्चवर्षाणि सप्तमासदिनत्रयम्।
भोजराजेन भोक्तव्यः सगौडो दक्षिणापथः।।

भोजविषयिणीम् इमां भविष्यवाणीं निशम्य मुञ्जो विच्छायवदनोऽभूत्। ततो राजा ब्राह्मणं सम्प्रेष्य निशीथे शयनमासाद्य व्यचिन्तयत्-यदि राजलक्ष्मीर्भोजकुमारं गमिष्यति, तदाहं जीवन्नपि मृतः। ततश्च अभुक्त एव सः एकाकी किमपि चिन्तयित्वा बङ्गदेशाधीश्वरं वत्सराजं समाकारितवान्। वत्सराजश्च धारानगरीं सम्प्राप्य राजानं प्रणिपत्योपविष्टः। राजा च सौधं निर्जनं विधाय वत्सराजं प्राह-त्वया भोजो भुवनेश्वरी-विपिने रात्रौ हन्तव्यः, छिन्नं च तस्य शिरः मत्पार्श्वे अन्तःपुरम् आनेतव्यम्। एतन्निशम्य वत्सराजः उत्थाय नृपं नत्वा प्रावोचत्- यद्यपि देवादेशः प्रमाणम्, पुनरपि किञ्चिद् वक्तुकामोऽस्मि, सापराधमपि मे वचः क्षन्तव्यम्। देव! पुत्रवधो न कदापि हिताय भवतीति।

वत्सराजस्य इदं वचनमाकर्ण्य कुपितो राजा प्राह-त्वं मम सेवकोऽसि, मया यत्कथ्यते त्वया तद् विधेयम्। पुनः वत्सराजः राजाज्ञा पालनीयैवेति मत्वा तूष्णीं बभूव। अनन्तरम् अनिच्छन्नपि वत्सराजः भोजं रथे निवेश्य रात्रौ वनं नीतवान्। तत्र आत्मनो वधयोजनां ज्ञात्वा भोजः किमपि वत्सराजं कथितवान्। तद्वचनैः वैराग्यमापन्नो वत्सराजः तं न हतवान्, अपितु गृहमागत्य भोजं गृहाभ्यन्तरे भूमौ निक्षिप्य ररक्ष। पुनः कृत्रिमरूपेण भोजस्य मस्तकं कारयित्वा राजभवनं गत्वा वत्सराजो राजानं प्राह-श्रीमता यदादिष्टं तत्साधितमिति। ततो राजा भोजवधं ज्ञात्वा तं पृष्टवान्-वत्सराज! खड्गप्रहारसमये तेन किमुक्तम्?

वत्सराजेन च राज्ञे भोजस्य अन्तिमसन्देशरूपेण तत्प्रदत्तः श्लोकः समर्पितः-

मान्धाता च महीपतिः कृतयुगालङ्कारभूतो गतः
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः।।
अन्ये वापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिवं भूपते!
नैकेनापि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति।।

श्लोकमिमम् अधीत्य शोकसन्तप्तो मुञ्जः प्रायश्चित्तं कर्तुं आत्मनो वह्नौ प्रवेशनं निश्चितवान्। राज्ञः वह्निप्रवेशकार्यक्रमं श्रुत्वा वत्सराजः बुद्धिसागरं नत्वा शनैः-शनैः प्राह-तात! मया भोजराजो रक्षित एवास्ति। पुनः बुद्धिसागरेण तस्य कर्णे किमपि कथितम्, यन्निशम्य वत्सराजः ततो निष्क्रान्तः। पुनः राज्ञो वह्निप्रवेशकाले कश्चन कापालिकः सभां समागतः। सभामागतं कापालिकं दण्डवत् प्रणम्य मुञ्जः प्रावोचद्-हे योगीन्द्र! महापापिनो मया हतस्य पुत्रस्य प्राणदानेन मां रक्षेति। अथ कापालिकस्तं प्रावोचद्-राजन्! मा भैषीः। शिवप्रसादेन स जीवितो भविष्यति। तदा श्मशानभूमौ कापालिकस्य योजनानुसारं भोजः तत्र समानीतः। 'योगिना भोजो जीवितः' इति कथा लोकेषु प्रसृता। पुनः गजेन्द्रारूढो भोजो राजभवनमगात्। सन्तुष्टो राजा मुञ्जः भोजं निजसिंहासने निवेश्य निजपट्टराज्ञीभिश्च सह तपोवनभूमिं गत्वा परं तपस्तेपे। भोजश्चापि चिरं प्रजाः पालितवान्।

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

समजनि	-	उत्पन्न हुआ।
जराम्	-	बुढ़ापे को।
संवीक्ष्य	-	देखकरके।
अपहाय	-	छोड़ करके।
वृथा	-	व्यर्थ।
उच्छेदः	-	नाश।
उत्सङ्गे	-	गोद में।
दिवङ्गते	-	मृत्यु को प्राप्त करने पर।
सम्प्रेष्य	-	भेज करके।
विच्छायवदनः	-	कान्तिहीन मुखवाला।
निशीथे	-	रात में।
प्रणिपत्य	-	नमस्कार करके।
सौधम्	-	महल।
विपिने	-	वन में।
मत्पार्श्वे	-	मेरे पास।
विधेयम्	-	करना चाहिए।
साधितम्	-	किया।
कृतयुगालङ्कारभूतः	-	सत्ययुग के आभूषण स्वरूप।
अधीत्य	-	पढ़कर के।
याताः	-	चले गए हैं।
दिवम्	-	स्वर्ग को।
निशम्य	-	सुनकर।
मा भैषीः	-	मत डरो।
प्रसृता	-	फैली हुई।
आरूढः	-	चढ़ा हुआ।
दशास्यान्तकः	-	दशास्यस्य रावणस्य अन्तकः नाशकः रावण का नाश करने वाला।

सन्धिविच्छेदः

पञ्चवार्षिकस्तदा	-	पञ्चवार्षिकः + तदा
ह्यात्मनो	-	हि + आत्मनः
मुख्यामात्यानाहूयानुजम्	-	मुख्य + अमात्यान् + आहूय + अनुजम्
पुत्रहानिर्वंशोच्छेदश्च	-	पुत्रहानिः + वंश + उच्छेदः + च
तदुत्सङ्गे	-	तत् + उत्सङ्गे
तत्पदेऽन्यम्	-	तत्पदे + अन्यम्
विच्छायवदनोऽभूत्	-	विच्छायवदनः + अभूत्
राजलक्ष्मीर्भोजकुमारम्	-	राजलक्ष्मीः + भोजकुमारम्
तदाहम्	-	तदा + अहम्
जीवन्नपि	-	जीवन् + अपि
प्रणिपत्योपविष्टः	-	प्रणिपत्य + उपविष्टः
एतन्निशम्य	-	एतत् + निशम्य
पालनीयैवेति	-	पालनीया + एव + इति
सेतुर्येन	-	सेतुः + येन
दशास्यान्तकः	-	दश + आस्य + अन्तकः
नैकेनापि	-	न + एकेन + अपि
यन्निशम्य	-	यत् + निशम्य
रक्षेति	-	रक्ष + इति
एवास्ति	-	एव + अस्ति
राजभवनमगात्	-	राजभवनम् + अगात्
तपस्तेपे	-	तपः + तेपे
भोजश्चापि	-	भोजः + च + अपि

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) धाराराज्ये को राजा प्रजाः पर्यपालयत्?

(ख) सिन्धुलः कस्मै राज्यम् अयच्छत्?

(ग) सिन्धुलः कस्य उत्सङ्गे भोजं मुमोच?

(घ) मुञ्जः कं मुख्यामात्यं दूरीकृतवान्?

(ङ) कः विच्छायवदनः अभूत्?

(च) मुञ्जः कं समाकारितवान्?

(छ) वत्सराजः भोजं रथे निवेश्य कुत्र नीतवान्?

(ज) कृतयुगालङ्कारभूतः क आसीत्?

(झ) महोदधौ सेतुः केन रचितः?

(ञ) कः वह्नौ प्रवेशं निश्चितवान्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) भोजः कस्य पुत्रः आसीत्?

(ख) सिन्धुलः किं विचारयामास?

(ग) सभायां कीदृशः ब्राह्मणः आगतवान्?

(घ) कः भोजस्य जन्मपत्रिकां निर्मितवान्?

(ङ) मुञ्जः किम् अचिन्तयत्?

(च) वत्सराजः भोजं कुत्र नीतवान्?

(छ) वत्सराजः कम् अनमत्?

(ज) मुञ्जः कापलिकं किम् उक्तवान्?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) <u>सिन्धुलस्य</u> भोजः पुत्रः अभवत्।

(ख) सिन्धुलः राज्यं <u>मुञ्जाय</u> अयच्छत्।

(ग) एकदा एकः ब्राह्मणः <u>सभायाम्</u> आगच्छत्।

(घ) मुञ्जः <u>भोजस्य</u> जन्मपत्रिकां अदर्शयत्।

(ङ) वत्सराजः <u>भोजं</u> गृहाभ्यन्तरे ररक्ष।

(च) मुञ्जः <u>वह्नौ</u> प्रवेशं निश्चितवान्।

(छ) मुञ्जः सभामागतं <u>कापालिकं</u> दण्डवत् प्राणमत्।

(ज) भोजः चिरं <u>प्रजाः</u> पालितवान्।

4. प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत-

यथा -	ज्ञात्वा	उपसर्गः	धातुः	प्रत्ययः
	ज्ञा	-	ज्ञा	क्त्वा

(क) आलोक्य

(ख) संवीक्ष्य

(ग) अपहाय

(घ) दत्तम्

(ङ) विचार्य

(च) दूरीकृत्य

(छ) समागम्य

(ज) विधाय

(झ) भोक्तव्य

(ञ) सम्प्रेष्य

5. प्रकृति-प्रत्ययं नियुज्य शब्दं लिखत-

यथा - आ + सीद् + ल्यप् = आसाद्य

(क) जीव् + शतृ

(ख) मृ + क्त

(ग) चिन्त् + क्त्वा

(घ) हन् + तव्यत्

(ङ) आ + नी + तव्यत्

(च) नि + शम् + ल्यप्
(छ) नम् + क्त्वा
(ज) आ + कर्ण् + ल्यप्
(झ) नि + क्षिप् + ल्यप्
(ञ) मन् + क्त्वा
(ट) ज्ञा + क्त्वा
(ठ) नी + क्तवतु
(ड) आ + पद् + क्त
(ढ) हन् + क्तवतु
(ण) आ + दिश् + क्त

6. उचित अर्थेन सह मेलनं कुरुत-

यथा- वसुमती - पृथ्वी

(क) निशीथे - गमिष्यति
(ख) प्रणिपत्य - समुद्रे
(ग) निशम्य - रात्रौ
(घ) पार्श्वे - प्रणम्य
(ङ) विपिने - श्रुत्वा
(च) दशास्यान्तकः - समीपे
(छ) दिवम् - वने
(ज) अधीत्य - रामः
(झ) महोदधौ - स्वर्गम्
(ञ) यास्यति - पठित्वा

7. मञ्जूषायां प्रदत्तैः अव्ययशब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

तु	**एव**	**तदा**	**किमर्थम्**	**पुरा**	**चिरम्**

.... सिन्धुलः नाम राजा आसीत्। सः .... प्रजाः पर्यपालयत्। वृद्धावस्थायां तस्य एकः पुत्रः अभवत्। .... सः अचिन्तयत् .... न स्वपुत्रं भ्रातुः मुञ्जस्य उत्सङ्गे समर्पयामि। सिन्धुलः पुत्रं मुञ्जस्य उत्सङ्गे समर्प्य .... परलोकम् अगच्छत्। सिन्धुले दिवङ्गते मुञ्जस्य मनसि लोभः समुत्पन्नः। लोभाविष्टः सः .... भोजस्य विनाशार्थं उपायं चिन्तितवान्।

8. उदाहरणानुसारं लिखत-

(क) यथा - पर्यपालयत्

उपसर्गः	**धातुः**	**लकारः**	**पुरुषः**	**वचनम्**
परि	पाल्	लङ्	प्रथम पुरुष	एकवचन

(1) प्रयच्छामि

(2) व्यचिन्तयत्

(3) यास्यति

(4) मारयिष्यति

(5) कथयन्ति

(6) भवति

(7) असि

(ख) यथा - आत्मनः

शब्दः	**लिङ्गः**	**विभक्तिः**	**वचनम्**
आत्मन्	पुल्लिङ्गः	षष्ठी	एकवचनम्

(1) पुत्राय

(2) लोकाः

(3) वचः

(4) भूमौ

(5) श्रीमता

(6) महोदधौ

(7) वह्नौ

9. विशेषणं विशेष्येण सह योजयत-

यथा - महाबलम् मुञ्जम्

(क) बालम्	राज्यम्
(ख) दत्तम्	पुत्रम्
(ग) दिवंगते	भविष्यवाणीम्
(घ) ज्योतिःशास्त्रपारंगतः	राजनि
(ङ) इमाम्	वत्सराजम्
(च) बङ्गदेशाधीश्वरम्	ब्राह्मणः
(छ) सन्तप्तः	वत्सराजम्

योग्यताविस्तारः

1. अधोलिखितानाम् आभाणकानां समानार्थकानि वाक्यानि पाठे अन्वेष्टव्यानि

   1. चेहरा फीका पड़ गया 2. जैसी आपकी आज्ञा 3. लोगों में बात फैल गई

2. पौराणिकपरम्परायां चत्वारः युगाः मताः। ते यथा-

   कृतयुगः (सत्ययुगः)
   त्रेतायुगः
   द्वापर युगः
   कलियुगः

3. मान्धाता सूर्यवंशस्य प्रतापी राजा अभवत्। तेन प्रजायाः पालनं सम्यक्तया कृतम्। सः स्वयुगस्य अलङ्कारभूतः नृप आसीत्।

12077CH08

अष्टमः पाठः

हल्दीघाटी

भारतभूमि शताब्दियों तक पराधीन रही, विदेशी आक्रान्ताओं के द्वारा दमन किये जाने पर भी भारतीयों की स्वतन्त्रता प्राप्ति की इच्छा सदैव बलवती रही। महाराणा प्रताप मुगल शासकों के साथ आजीवन संघर्ष करते रहे तथा अत्यधिक साधन-सम्पन्न न होने पर भी विशाल मुगल साम्राज्य से लोहा लेते रहे। राजस्थान में हल्दीघाटी नामक स्थान पर विशाल मुगल सेना को मुट्ठी भर महाराणा प्रताप के सैनिकों ने नाकों चने चबवाए- यह तथ्य इतिहास से परिपुष्ट है। हल्दीघाटी की लड़ाई को आधार बनाकर लेखकों ने अनेक रचनाएँ प्रस्तुत कर उन शहीदों को श्रद्धाञ्जलि दी। प्रतापविजय नामक इस खण्डकाव्य में लेखक श्रीईशदत्तशास्त्री हल्दीघाटी के प्रत्येक कण को उस संघर्ष का साक्षी मानते हुए सुन्दर मनोरम श्लोकों में इस ऐतिहासिक कथानक को उपनिबद्ध करते हैं। यह पाठ निश्चित ही आज के युवकों को प्रेरणा देगा तथा उनमें स्वाभिमान की भावना भरेगा।

स्वाधीनताऽऽर्यभुवि मूर्तिमती समाना
    राणाप्रताप-बलवीर्यविभासमाना।
आटीकते समुपमा नहि यां सुशोचिः
    शाटीव सा जयति काचन हल्दिघाटी ॥1॥

प्राची यदा हसति हे प्रिय! मन्दमन्दं
    वायुर्यदा वहति नन्दनजं मरन्दम्।
या प्रत्यहं किल तदा मतिमाननीयां
    शोभां दधात्युषसि काञ्चनकाञ्चनीयाम् ॥2॥

मा कातराः! स्पृशत मां प्रिय-पारतन्त्र्याः!
    अद्यापि यन्न विहिता जननी स्वतन्त्रा।
यत्रेदमेव गदतीव ततिस्तरूणां
    शाखाकदम्ब-कृत-मर्मरमातनोति ॥3॥

वीराग्रणीरभय-युद्धकलाकलापः
    क्वाऽस्तेऽद्य हा! स तनयः सनयः प्रतापी।
अत्रत्य-निर्जनवनेऽथ यदा कदाचिद्
    मातेव रोदिति सखे! कुररी नु काचित् ॥4॥

पुष्पं फलं तदनु गन्धवहः समीरः
    खद्योत-पंक्तिरमला च पिकालि-गीतिः।
अद्यापि यत्र सरल-प्रकृति-प्रणीतं
    पञ्चोपचारमिव पूजनमस्ति मातुः ॥5॥

नीलेन पक्ष-निवहेन खमाहसन्तः
चञ्च्वा फलानि विमलानि समञ्चयन्तः।
'श्रीराम' नाम मधुरं मधुरं क्वणन्तः
अद्यापि यत्र सुशुका विलसन्ति सन्तः ।।6।।

अत्र प्रताप-नृपतेः प्रकट-प्रतापा
एकाऽपि हन्त! शतधाऽभवदस्र-धारा।
युद्धेऽधिकोशमपि शत्रुवधे क्रमेण
ज्योत्स्ना तमः -सहचरी चपलेति चित्रम् ।।7।।

सैषा स्थली चकित-चेतकचङ्क्रमाणां
सैषा स्थली कुटिलकुन्तपराक्रमाणाम्।
सैषा स्थली प्रियतमाऽप्यसुतोऽमराणां
सैषा स्थली भयकरी नर-पामराणाम् ।।8।।

वीक्ष्य प्रभा हसित-चारु-पुरन्दराणां
सङ्ंग स नृत्यममलं शिखिसुन्दराणाम्
सम्भासते वरभुवः सुषमात्युदारः
हर्षाङ्कितो हरितहीरक-कण्ठहारः ।।9।।

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

आर्यभुवि	-	आर्याणां भूः आर्यभूः तस्यां, आर्यभूमि, आर्यावर्त।
मूर्तिमती	-	मूर्ति + मतुप् स्त्री. प्र. ए. व., साक्षात्, साकार।
बलवीर्य-विभासमाना	-	वलेन वीर्येण च विभासमाना, शक्ति-पराक्रम-शोभमाना, शक्ति और पराक्रम से चमकती हुई।
आटीकते	-	आ + टीक्, लट्, प्र.पु.ए.व., वर्तते, दिखाई देती है।
समुपमां	-	समानी उपमा यस्याः सा ताम्, जिसके समान उपमा किसी की हो।
सुशोचिः	-	देदीप्यमान, चमकदार।
शाटी	-	साड़ी।
काचन	-	कोई (अव्यय)।
प्राची	-	पूर्व दिशा।
नन्दनजं	-	नन्दने जायते इति तत्, नन्दन वन में होने वाला।
मरन्दम्	-	पुष्परसम् - पराग।
प्रत्यहं	-	अहनि अहनि अव्ययीभाव समास, प्रतिदिन।
किल	-	(अव्यय) निश्चय से।
उषसि	-	उषस्, सप्तमी ए.व. प्रातःकाल।
मतिमाननीयां	-	मत्या माननीयां तृ. तत्पु. बुद्धिसम्मतां, विद्वानों से सम्मानित।
काञ्चन-काञ्चनीयाम्	-	काञ्चनम् इव कमनीयाम्, स्वर्णिम् सोने की तरह चमकने वाली।
कातराः	-	भीताः डरपोक, कायर।
प्रिय-पारतन्त्र्याः	-	प्रियम् पारतन्त्र्यम् येषां ते पराधीनताप्रियाः, पराधीनता में रुचि रखने वाले।
विहिता	-	वि + धा + क्त, कृता, की गई।
गदतीव	-	गदति + इव, कथयति, बोल रही है।
ततिः	-	समूहः, पंक्ति।

मर्मरम्	-	शुष्कपत्र-ध्वनिः, सूखे पत्तों की आवाज।
आतनोति	-	विस्तारयति, फैलाती है।
वीराग्रणीः	-	वीरेषु अग्रणीः, वीरों में श्रेष्ठ।
युद्धकलापः	-	युद्धस्य कलायां कलापः, युद्धकला में निपुण।
क्व	-	कुत्र, कहाँ।
आस्ते	-	अस्ति, है।
तनयः	-	पुत्रः, पुत्र।
सनयः	-	नयेन सहितः सनयः, नीतिज्ञ।
अत्रत्य	-	यहाँ के।
कुररी	-	क्रौञ्च पक्षी।
गन्धवहः	-	गन्धम् वहति, उपपद तत्पु., वायु।
खद्योत	-	जुगनू।
अमला	-	शुद्धा, शुद्ध।
पिकालिः	-	पिकानां अलिः, ष. तत्पु., कोकिल-पंक्तिः, कोयल की पंक्ति।
पञ्चोपचारमिव	-	पञ्चानां उपचाराणां समूहः, द्विगु स.।
उपचारः	-	सत्कारविधिः, सत्कार सामग्री।
पक्षनिवहेन	-	पक्षाणां निवहेन, ष. तत्पु., पंखों का समूह।
खम्	-	आकाशम्, आकाश को।
आहसन्तः	-	ईषत् हसन्तः, तिरस्कृत करते हुए।
समञ्चयन्तः	-	सम् + अञ्च् + णिच् + शतृ, शोभयन्तः, चमकाते हुए।
क्वणन्तः	-	क्वण् + शतृ, पु. प्र. ब. व., शब्दं कुर्वन्तः, शब्द करते हुए।
सुशुकाः	-	सुन्दराः कीराः, सुन्दर तोते।
विलसन्ति	-	शोभन्ते, सुशोभित होते हैं।
शतधा अस्रधारा	-	सौ प्रकार की आँसुओं की धारा।

अधिकोशमपि	-	कोशे इति, कोश (म्यान) में।
ज्योत्स्ना	-	चन्द्रिका, चाँदनी।
सहचरी	-	युगपद् अनुगामिनी, साथ चलने वाली।
चपलेति	-	चपला इति, बिजली।
चङ्क्रमाणाम्	-	गति, घोड़े की टाप।
कुन्तः	-	भाला।
चित्रम्	-	विचित्रम्, आश्चर्य की बात।
कुटलिम्	-	वक्रम् , टेढ़ा।
असुतः	-	असुभ्यः इति असुतः, असु + तसिल्, प्राणों से बढ़कर।
अमराणां	-	देवानाम्, देवताओं का।
पामराणाम्	-	नीचानां, नीचों का।
वीक्ष्य	-	वि + ईक्ष् + क्त्वा > ल्यप्, दृष्ट्वा, देखकर।
पुरन्दराणां	-	इन्द्राणां, श्रेष्ठ।
हसितम्	-	उपहसितम्, उपहास करना।
नृत्यममलम्	-	नृत्यम् + अमलम्, पवित्र नाच।
सम्भासते	-	सम्यक् भासते, चमकती है।
वरभुवः	-	वरा भूः वरभूः तस्याः, श्रेष्ठ भूमि का।
सुषमाऽत्युदारः	-	सुषमया अत्युदारः इति सुषमात्युदारः।
हरितहीरकम्	-	हरितं हीरकम्, कर्मधारय, हरा हीरा।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं ददत -

(क) आर्यभुवि शाटीतः का विराजते?
(ख) उषसि हल्दीघाटी कीदृशीं शोभां दधाति?
(ग) सनयः तनयः कः अस्ति?
(घ) के नीलेन पक्षेण खम् आहसन्ति?
(ङ) वरभुवः सुषमा कथं सम्भासते?

(च) तमः सहचरी का कथिता?
(छ) प्रतापनृपतेः अस्रधारा कतिधा अभवत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) मूर्तिमती हल्दीघाटी कथम् आटीकते?
(ख) कदा हल्दीघाटी मतिमाननीयां शोभां दधाति?
(ग) पिकालिगीतिः किमिव मातुः पूजनं करोति?
(घ) कथं क्वणन्तः सुशुकाः विलसन्ति?
(ङ) हल्दीघाटी केषां स्थली अस्ति?
(च) वरभुवः अत्युदारा सुषमा कीदृशी भासते?
(छ) प्रकृतिः केषां पञ्चपदार्थानामुपचारेण पूजनं करोति?

3. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) <u>मूर्तिमती</u> हल्दीघाटी जयति।
(ख) या <u>उषसि</u> शोभां दधाति।
(ग) <u>तरूणां</u> ततिः कदम्बकृतमर्मर<u>म्</u> आतनोति
(घ) निर्जनवने <u>कुररी मातेव</u> रोदिति।
(ङ) मातुः पञ्<u>चोप</u>चारं पूजनं करोति।
(च) अस्रधारा <u>शतधा</u> अभवत्।
(छ) अ<u>सुत</u>ः अपि प्रियतमा स्थली।

4. अधोलिखितपदेषु सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कुरुत-

(क) स्वाधीनतार्यभुवि
(ख) दधाति + उषसि
(ग) ततिस्तरूणाम्
(घ) निजर्नवने + अथ
(ङ) सुशुका विलसन्ति
(च) तदनु

5. अधोलिखितपदेषु प्रकृतिं प्रत्ययं च पृथक् कुरुत-

(क) ततिः

(ख) भासमाना

(ग) विहिता

(घ) प्रतापी

(ङ) हसन्तः

(च) शिखी

(छ) प्रणीतम्

6. अधः प्रदत्तं श्लोकं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पुनः लिखत-

प्रत्यहम्, मन्दमन्दं, मरन्दं, वहति, शोभां, काञ्चन।

प्राची यदा हसति हे प्रिय ....

वायुर्यदा .... नन्दनजं..............................।

या .... किल तदा मतिमाननीयां

.........................दधात्युषसि ....काञ्चनीयाम्।।

7. विशेषणानि विशेष्याणि च योजयित्वा पुनः लिखत-

विशेषणानि	विशेष्याणि
(क) सुशोचिः	तनयः
(ख) पारतन्त्र्याः	सुशुकाः
(ग) प्रतापी	शाटी
(घ) क्वणन्तः	अस्रधारा
(ङ) शतधा	कातराः
(च) नीलेन	खद्योतपंक्तिः
(छ) अमला	पक्षनिवहेन

8. अधोलिखितानां पदानां व्याकरणानुसारं पदपरिचयः दीयताम्-

स्वाधीनता, माननीया, सन्तः, तमः, सम्भासते, स्थली, माता

9. हल्दीघाटीयुद्धस्य ऐतिहासिकः परिचयः हिन्दी/आंग्ल/संस्कृतभाषया देयः।

10. महाराणाप्रतापस्य स्वातन्त्र्यसंघर्षं हिन्दी/आंग्ल/संस्कृतभाषया वर्णयत।

योग्यताविस्तारः

साहित्ये समाज प्रतिबिम्बितः भवति। कविः स्वपरिवेशेन एवाप्लावितो भवति। काव्यकर्म कर्तुं कविः कल्पनामाश्रयेत, ऐतिहासिकं वा वृत्तं परिवर्त्य चित्रयति। भारतं पराधीनतायाः मोचयितुं समये समये नैके वीराः स्वप्राणोत्सर्गं विहितवन्तः। एतादृशेषु महाभटेषु राणासांगा, महाराणाप्रतापः, लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे, इत्यादयोऽग्रगण्याः सन्ति। बहुधा समये समयेऽनेके काव्यकर्तारः एतादृशां सेनानीनां कथाः आश्रित्य काव्यविधाः प्रणीतवन्तः। संस्कृतवाङ्मये विद्यते एतद्विधानां रचनानां महती परम्परा। यस्यां शिवराजविजयम्, भारतविजयम् इत्यादयः प्रमुखाः सन्ति। एतेषु स्वतन्त्रताया प्रेप्सा, हुतात्मवीरान् प्रति च श्रद्धा ससम्मानं प्रदर्शिता।

12077CH09

नवमः पाठः

मदालसा

प्रस्तुत पाठ जम्मूविश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त आचार्या वेदकुमारी घई द्वारा रचित 'पुरन्ध्रीपञ्चकम्' नामक रूपकसंग्रह से संकलित किया गया है। 'पुरन्ध्रीपञ्चकम्' आधुनिकनाट्यपरम्परा में एक सामयिक विषयों से सम्बन्धित रोचक एवं शिक्षाप्रद रूपकों का संग्रह है। प्रस्तुत पाठ में 'पुरन्ध्रीपञ्चकम्' के तृतीय-रूपक 'मदालसा' के कुछ अंशो का संकलन किया गया है, जिसमें राजकुमार ऋतध्वज तथा मदालसा के संवाद के माध्यम से राजकुमारी मदालसा के स्वाभिमान एवं नारी अस्मिता का एक नए परिप्रेक्ष्य में सुन्दर चित्रण किया गया है।

(ततः प्रविशति प्रकृतिसौन्दर्यमवलोकयन् महाराजस्य शत्रुजितः पुत्रः ऋतध्वजः)

ऋतध्वजः-अहो शोभनं गन्धर्वराजविश्वावसोः राजोद्यानम्। आम्रमञ्जरीणां परां शोभां दृष्ट्वा कोकिलानां च मधुरवचांसि श्रुत्वा कस्य यूनो हृदयं सहसा उत्कण्ठितं न भविष्यति?

वामपार्श्वे रमणीनामालाप इव श्रूयते। अत्रैव स्थित्वा श्रोष्यामि।

कुण्डला - सखि मदालसे! त्वं तु केवलं विद्याध्ययने एव रता कियन्तं कालं यावत् ब्रह्मचर्यव्रतं धारयिष्यसि?

मदालसा - ज्ञानोदधिस्तु अनन्तपारो गभीरश्च। मया सागरतटे स्थित्वा कतिपयबिन्दव एव प्राप्ता अद्यावधि।

कुण्डला - विनयशीले! विद्या ददाति विनयम् अत एव एवं भणसि। कुलगुरु-तुम्बरुमहाभागैस्तु गन्धर्वराजाय अन्यदेव सूचितम्।

मदालसा - किं श्रुतं त्वया यद् गुरुवर्यैः माम् अधिकृत्य पित्रे कथितम्?

कुण्डला - अथ किम्। राजकुमारी मदालसा सर्वविद्यानिष्णाता जाता परं तया स्वयं वरः न प्राप्तः अतः तस्यै योग्यवरस्य अन्वेषणं कार्यम् इत्यासीद् गुरुपादानां मतम्।

मदालसा - (हसित्वा) **नहि जानन्ति ते यदहं तु विवाहबन्धनं स्वीकर्तुं न इच्छामि।**

कुण्डला - किं करिष्यसि तदा।

मदालसा - ब्रह्मवादिनी भविष्यामि। आचार्येतिपदं प्राप्य शिष्येभ्यः जीवनकलां शिक्षयिष्यामि।

कुण्डला - जाने तेऽभिरुचिम् अध्ययने अध्यापने च। परं यथा लतेयं सहकारमवलम्बते तथैव नारी जीवनयात्रायां कमपि सहचरम् अपेक्षते यः तस्याः अवलम्बनं स्यात्।

मदालसा - नास्ति मत्कृते आवश्यकता अवलम्बनस्य। स्वयं समर्था जीवनपथे चलितुमहं न कस्यापि सङ्कΩतैः नर्तितुं पारयामि।

कुण्डला - नर्तिष्यसि तदा एकाकिनी एव।

मदालसा - (विहस्य) यदि त्वं शीघ्रमेव पतिगृहं गमिष्यसि तदा एकाकिनी भविष्यामि परं एकः उपायः अपि चिन्तितः मया।

कुण्डला - कः उपाय?

मदालसा - सङ्गीतसाहित्यमाध्यमेन ब्रह्मविद्यां सरसां विधाय बहुभ्यः शिशुभ्यः शिक्षणं प्रदास्यामि।

कुण्डला - गृहस्थाश्रमं प्रविश्य स्वशिशूनां चरित्रनिर्माणं मातुराधीनम्। तत्र का विचारणा?

मदालसा - यथाहं पश्यामि पुरुषः भार्यायां स्वाधिपत्यं स्थापयति। द्रौपदीं स्वीयां सम्पत्तिं मन्यमानः युधिष्ठिरः तां द्यूते हारितवान् यथा सा निर्जीवं वस्तु आसीत्।

कुण्डला - निर्जीवं तु नासीत् परं युधिष्ठिरस्य एषा एव चिन्तनसरणिः आसीत् इति प्रतीयते।

मदालसा - हरिश्चन्द्रः स्वपत्नीं शैव्यां, पुत्रं रोहितं च जनसङ्कले आपणे विक्रीतवान्। नास्ति मे मनोरथः ईदृशं पत्नीपदमङ्गीकर्तुम्।

कुण्डला - कटुसत्यं खल्वेतत्। परं सखि! अस्मिन् संसारे विभिन्नप्रकृतिकाः पुरुषा वसन्ति। स्वप्रकृत्यनुकूलः वरः अपि प्राप्यते। त्वां तु नवनवोन्मेषशालिन्या प्रतिभया विहितैः नूतनैः प्रयोगैः अस्मान् सर्वान् विस्मापयसि। गृहस्थाश्रमोऽपि एका प्रयोगशाला यस्यां त्वं स्वज्ञानविज्ञानयोः प्रयोगं कर्तुं शक्ष्यसि।

मदालसा - कुण्डले! दुर्लभो जनः ईदृशः यः गृहस्थप्रयोगशालायां स्वपत्न्यै स्वतन्त्रतां दद्यात्।

ऋतध्वजः- (स्वगतम्) अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम्। (प्रकाशम्) उपस्थितोऽहं शत्रुजितः पुत्रः ऋतध्वजः आज्ञा चेत् अहमपि अस्यां परिचर्चायां सम्मिलितो भवेयम्।

कुण्डला - स्वागतम् अतिथये। अपि श्रुताः भवद्भिः मम सखीविचाराः?

ऋतध्वजः-आम्! अत एव प्रष्टुमुत्सहे किं गन्धर्वराजविश्वावसुमहाभागाः अपि स्वपत्नीं

युधिष्ठिर इव हारितवन्तः हरिश्चन्द्र इव विक्रीतवन्तः?

कुण्डला - मदालसे तूष्णीं किमर्थं तिष्ठसि? देहि प्रत्युत्तरम्।

ऋतध्वजः - एकस्य अपराधेन सर्वा जातिः दण्ड्या इति विचित्रो न्यायः तव सख्याः।

मदालसा - अत्रभवन्तः नारीस्वाधीनतामधिकृत्य किं कथयन्ति?

ऋतध्वजः - माता एव प्रथमा आचार्या इत्यस्ति मे अवधारणा। नारी एव समस्तसृष्टेः निर्मात्री। परं कथनेन किम्? परीक्ष्य एव ज्ञास्यति अत्र भवती। परीक्षा- र्थमुद्यतोऽस्मि गृहस्थाश्रमप्रयोगशालायाम्।

मदालसा - स्वीकृतः प्रस्तावः।

कुण्डला - दिष्ट्या वर्धेथां युवाम्। मित्रवर, गन्धर्वकन्या मदालसा गान्धर्वविवाह-विधिना वृणोति अत्र भवन्तम्। आकारये अहं कुलगुरुं तुम्बुरुम्। असौ अग्निं साक्षीकृत्य आशीर्वचांसि वक्ष्यति।

ऋतध्वजः - प्रथमं तु सखीवचनं श्रोष्यावः। तदनु स्वयमेव कुलगुरुं पितरौ च सभाजयितुं गमिष्यावः।

कुण्डला - परस्परप्रीतिमतोः भवतोः उपदेशस्य नास्ति कोऽपि अवकाशः तदापि सखीस्नेहः मां भाषयति-भर्त्रा सदैव भार्या भर्तव्या रक्षितव्या च। यतो हि धर्मार्थकामसंसिद्धये यथा भार्या भर्तुः सहायिनी भवति तथा न कोऽपि अन्यः। परस्परमनुव्रतौ पतिपत्न्यौ त्रिवर्गं साधयतः। पतिः यदि प्रभूतं धनम् अर्जयित्वा गृहमानयति तत् खलु पत्न्यभावे कुपात्रेषु दीयमानं क्षयमेति।

ऋतध्वजः - लक्ष्म्याः रक्षार्थं पत्न्याः सहयोगः अनिवार्यः।

मदालसा - कुण्डले! लक्ष्मीपूजायां न मे प्रवृत्तिः। यदि लक्ष्मीः पूज्या प्रिया च अतिथिवर्यस्य, तदा इदानीमेव मे नमस्कारः।

ऋतध्वजः - स्वाभिमानिनि प्रिये! समक्षं ते कथं कापि सपत्नी स्थातुं शक्नोति? लक्ष्मीस्तु तव दासी भविष्यति नैव सपत्नी। मद्गार्हस्थ्यं तु त्वदधीनं भविष्यति। आत्मानं भाविसन्ततिं च ज्ञानविज्ञानानुसन्धात्र्या हस्ते समर्पयितुमीहे। आगम्यताम् गुरुभ्यः पितृभ्यां च समाचारं श्रावयावः।

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

राजोद्यानम्	-	राज + उद्यानम्, राज्ञः उद्यानम्, षष्ठीतत्पुरुषः, राजा का उद्यान।
आम्रमञ्जरीणाम्	-	आम्रस्य मञ्जरी आम्रमञ्जरी तासां मञ्जरीणाम्, आम की बौरों का।
मधुरवचांसि	-	मधुराणि वचांसि, कर्मधारय, मधुरवचनों को।
यूनः	-	युवन् शब्द, ष.ए.व., तरुणस्य, युवक का।
रमणीनाम्	-	स्त्रीणाम्, युवतियों का।
आलाप इव	-	आलापः + इव, वार्तालाप सा।
रता	-	रम् + क्त, स्त्री.प्र.ए.व., संलग्नाः, तत्पर।
श्रूयते	-	श्रु + कर्म वा. लट्, प्र.पु.ए.व., सुना जाता है।
स्थित्वा	-	स्था + क्त्वा, ठहरकर।
कियन्तं	-	कियत् द्वि.ए.व., कुछ।
अनन्तपारो	-	न अन्तपारौ यस्य सः, ब.व्री. समास, आदि अन्त रहित।
गभीरश्च	-	गभीरः + च, गंभीर।
कतिपय बिन्दवः	-	कतिपये बिन्दवः, कर्मधारय, कुछ अंश।
सूचितम्	-	सूच् + क्त, निवेदितम्, सूचित किया।
सर्वविद्यानिष्णाता	-	सर्वासु विद्यासु निष्णाता तत्पु., सभी विद्याओं में निपुण।
जाता	-	जन् + क्त, स्त्री. प्र. ए.व. हो गई है।
अन्वेषणं	-	अनु + इष् + ल्युट्, नपुं. प्र.ए.व., गवेषणम्, खोज।
ब्रह्मवादिनी	-	ब्रह्मवदितुं शीलं यस्याः सा ब्रह्मन् + वद् + णिच् + णिनि स्त्री., प्र.ए.व., वेदान्त में निपुण।
प्राप्य	-	प्र + आप् + क्त्वा + ल्यप्, अधिगत्य, पाकर।
शिक्षयिष्यामि	-	शिक्ष + णिच्, लृट्, उ.पु., ए.व., शिक्षा दूंगी।
तेऽभिरुचिम्	-	ते + अभिरुचिम्, तुम्हारी लगन को।
अध्ययने	-	अधि + इ + ल्युट्, स.ए.व., पठने, पढ़ने में।
अध्यापने	-	अधि + इ + णिच् + ल्युट्, स.ए.व., पाठने, पढ़ाने में।
अपेक्षते	-	अप + ईक्ष, लट् प्र.पु.ए.व., आवश्यकता का अनुभव

करती है।

जीवनपथे	-	जीवनस्य पन्थाः जीवनपथः, ष.तत्पु., तस्मिन्, जीवन मार्गे, जीवन के रास्ते पर।
नर्तितुम्	-	नृत् + तुमुन्, नाचने के लिए।
एकाकिनी	-	एकाकिन्, स्त्री. प्र.ए.व., अकेली।
सरसां	-	रसेन सहितां, बहुव्रीहि समास, रसयुक्त।
विधाय	-	वि + धा + क्त्वा, ल्यप्, कृत्वा करके।
स्वाधिपत्यं	-	स्वस्य आधिपत्यम्, ष.तत्पु., अपना स्वामित्व।
हारितवान्	-	हृ + णिच् + क्तवत्, पु.प्र.ए.व., हरवा दिया।
युधिष्ठिरस्य	-	युधि + स्थिरः, युधिष्ठिरः अलुक् तत्पु., तस्य।
सरणिः	-	मार्गः, रास्ता।
प्रतीयते	-	प्रति + इ, कर्मवाच्य, लट् प्र.पु.ए.व. प्रतीतो भवति, प्रतीत होता है।
जनसङ्कुले	-	जनैः सङ्कुले, तृ.तत्पु., भीड़ से भरे हुए।
विभिन्नप्रकृतिकाः	-	विभिन्ना प्रकृतिः येषां ते ब.व्री., भिन्नस्वभावः, भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले।
स्वप्रकृत्यनुकूलः	-	स्वप्रकृति + अनुकूलः, स्वस्य प्रकृत्या अनुकूलः, अपने अनुकूल स्वभाव वाला।
नवनवोन्मेषशालिन्या	-	नवनवेन उन्मेषेण शालते या सा तया, नई नई चमकवाली।
विस्मापयसि	-	वि + स्मि + णिच् + लट्, म.पु., ए.व., चकितम् करोषि, आश्चर्यचकित कर रही हो।
शक्ष्यसि	-	शक् + लृट्, म.पु.ए.व., समर्थ होंगे।
प्रष्टुम्	-	प्रच्छ् + तुमुन्, पूछने के लिए।
अवधारणा	-	अव + धृ + णिच् + ल्युट्, धारणा, विचार धारा।
निर्मात्री	-	निर् + मा तृच् + स्त्री., निर्माण करने वाली।
आकारये	-	आ + कृ + णिच्, लट्, प्र.पु.ए.व., बुलाता हूँ।
पितरौ	-	माता च पिता च, द्वन्द्व, माता और पिता।

धर्मार्थकामसंसिद्धये - धर्मः च अर्थः च कामः च धर्मार्थकामाः, तेषां संसिद्धये, धर्म, अर्थ, काम की सिद्धि के लिए।
पतिपत्न्यौ - पतिः च पत्नी च द्वन्द्व समास, पति पत्नी।
दीयमानम् - दा + कर्मवाच्य, शानच्, नपुं.प्र.ए.व., दिया जाता हुआ।
समक्षम् - अक्ष्णोः सम्मुखम्, अव्ययीभाव, समास।
सपत्नी - समानः पतिः यस्याः सा, सौत।
त्वदधीनम् - तव अधीनम् ष.तत्पु., तुम्हारे अधीन।
ज्ञानविज्ञानानुसन्धात्र्या - ज्ञानस्य विज्ञानस्य च अनुसन्धात्र्याः, ष.तत्पु., ष.ए.व. ज्ञान विज्ञान की खोज करने वाली का।
ईहे - ईह् धातु, लट् उ.पु., ए.व., चाहता हूँ।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) उद्यानं कस्य आसीत्?
(ख) कः आम्रमञ्जरीणां शोभां दृष्ट्वा कूजति?
(ग) का विद्याध्ययने रता आसीत्?
(घ) का विनयं ददाति?
(ङ) का सर्वविद्यानिष्णाता आसीत्।
(च) मदालसा किं स्वीकर्तुं न इच्छति?
(छ) शिशूनां चरित्रनिर्माणं कस्याः अधीनम्?
(ज) कः भार्यायां स्वाधिपत्यं स्थापयति?
(झ) युधिष्ठिरः कां द्यूते हारितवान्?
(ञ) कः परिचर्यायां सम्मिलितः अभवत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरं ददत-

(क) कुलगुरुतुम्बरुः मदालसायाः विषये किं कथितवान्?
(ख) मदालसा विवाहबन्धनं तिरस्कृत्य किं कर्तुम् इच्छति?
(ग) ऋतध्वजः स्वपरिचयं कथं ददाति?

(घ) ऋतध्वजस्य नारीं प्रति का धारणा आसीत्?

(ङ) कस्याः रक्षार्थं पत्न्याः सहयोगः अनिवार्यः अस्ति?

(च) ऋतध्वजः लक्ष्म्याः वर्णनं कथं करोति?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) यूनोः हृदयं उद्यानस्य शोभां दृष्ट्वा उत्कण्ठितं भवति।

(ख) मदालसा ज्ञानस्य कतिपयबिन्दून् एव प्राप्तवती।

(ग) कुलगुरुतुम्बरुमहाभागैः गन्धर्वराजाय सूचितम्।

(घ) मदालसा शिष्यान् जीवनकलां पाठयितुम् इच्छति।

(ङ) मदालसा जीवने सङ्कΩतैः नर्तितुं न इच्छति स्म।

(च) पुरुषः भार्यायां स्वाधिपत्यं स्थापयति।

(छ) युधिष्ठिरः द्रौपदीं द्यूते हारितवान्।

(ज) हरिश्चन्द्रः पुत्रं जनसङ्कले आपणे विक्रीतवान्।

(झ) अस्मिन् संसारे विभिन्नप्रकृतिकाः पुरुषाः वसन्ति।

(ञ) लक्ष्म्याः रक्षार्थं पत्न्याः सहयोगः अनिवार्यः।

4. विशेषणं विशेष्येण सह योजयत-

(क) गभीरः	धनम्
(ख) सर्वविद्यानिष्णाता	ऋतध्वजः
(ग) विभिन्नप्रकृतिकाः	आपणे
(घ) निर्जीवम्	ज्ञानोदधिः
(ङ) जनसङ्कुले	पुरुषाः
(च) शत्रुजितः	मदालसा
(छ) अनुव्रतौ	वस्तु
(ज) प्रभूतम्	पतिपत्न्यौ

5. प्रकृतिप्रत्यययोः विभागं कुरुत-

यथा - स्थातुम् = स्था + तुमुन्

(क) दृष्ट्वा

(ख) श्रुत्वा

(ग) स्थित्वा

(घ) अधिकृत्य

(ङ) स्वीकर्तुम्

(च) नर्तितुम्

(छ) विधाय

(ज) मन्यमानः

(झ) कर्तुम्

(ञ) रक्षितव्या

6. अधोलिखितानि वाक्यानि कः कं प्रति कथयति

	कः कथयति	कम् प्रति
यथा - त्वं तु केवलं विद्याध्ययने एव रता	**मदालसा**	**कुण्डला**
(क) आचार्यापदं प्राप्य शिष्यान् जीवनकलां शिक्षयिष्यामि	....	
(ख) नारी जीवनयात्रायां कमपि सहचरमपेक्षते	....	....
(ग) अहम् न कस्यापि सङ्केतैः नर्तितुं पारयामि	....	....
(घ) किं गन्धर्वराजविश्वावसुमहाभागाः अपि स्वपत्नीं युधिष्ठिरः इव हारितवन्तः हरिश्चन्द्र इव विक्रीतवन्तः?		
(ङ) एकस्य अपराधेन सर्वा जातिः दण्ड्या इति विचित्रो न्याय तव सख्याः	....	....

7. हरिश्चन्द्रः समाजे कैः गुणैः प्रसिद्ध आसीत्।

8. नारीं प्रति ऋतध्वजस्य का धारणा आसीत्।

योग्यताविस्तारः

मदालसा पौराणिक कथासु आदर्शनार्या उदाहरणं प्रस्तौति। तया स्वपुत्रस्य चरित्रनिर्माणाय महान् प्रयासः कृतः। तथाहि शैशवे पुत्राय कथितः तस्याः अयं श्लोकः निद्रागीतेः (लोरी गीतेः) प्रसिद्धम् उदाहरणम्।

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि, निरञ्जनोऽसि।
संसारमाया परिवर्जितोऽसि।
संसारस्वप्नं त्यज मोहनिद्रां
मदालसा वाक्यमुवाच पुत्रम्।।

12077CH10

दशमः पाठः

प्रतीक्षा

आधुनिक उड़िया लेखकों में श्री रमाकान्त रथ का मूर्धन्य स्थान है। आप की अनेक कविताएँ देश-विदेश की भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। संस्कृत भाषा में इनकी कविताओं का अनुवाद "श्रीराधा" के रूप में प्रकाशित हुआ है। इसके अनुवादक श्री गोविन्द चन्द्र उद्गाता हैं। गीतगोविन्द की भाँति इस में भी राधा एवं कृष्ण के सख्यभाव को रहस्यवाद की छाया में बहुत सुन्दर प्रकार से वर्णित किया गया है। राधा कृष्ण की प्रतीक्षा करती है और अत्यन्त व्याकुल हो जाती है। दिन-रात प्रतीक्षा में उसे विभिन्न रूपों की जो छवि दिखाई देती है, वह वस्तुतः अनिर्वचनीय है। उनके रूप का साकल्येन वर्णन करना असम्भव ही है। कण-कण में विद्यमान वह उपास्य, भक्त को विभिन्न रूपों में दिखाई देता है - यह तथ्य बड़े ही प्रतीकात्मक प्रकार से इस गीत में प्रतिपादित किया गया है।

प्रतीक्षेऽहं तव कृते दिनं दिनम्
रजनीं रजनीं च
न जातु दर्शनं ददासि मे,
किं तावन्मे सा प्रतीक्षा?
तस्यां मे चाञ्चल्यपरिपूरितायां प्रतीक्षायाम्
कुत्र वा विद्यते स्थानम्
अवस्थानाय तव पूर्णतया?

यदा वा दृश्यते,
रूपस्यार्धाधिकं तदा तव
लोचनविषयातीतं भूत्वा तिष्ठति।
यत् किञ्चिदपि दृश्यते
तथापि न भजति स्पष्टरूपताम्
यतस्तत् समाच्छन्नमेव भवति
अशान्ति-प्रसूतैर्मे
स्मृति-दृश्याभिलाषैर्बहुविधैः,

अथ वा दृश्यते स्फुरज्जलवक्षसि
छायेव पादपानामुपकूलवर्तिनाम्।
दृष्टे सति कस्यचिन्नाम्नो रूपे
स्थाने तस्योपजायमानं दृश्यते
अन्यच्चन किञ्चन रूपं नामान्तर-चिह्नितम्।
एकमेव रुपं भूत्वा।

हन्त नाहं भाजनमभवमेतावताऽपि कालेन
एकमेव रूपं कर्तुमात्मनः पूर्णतया।

कियान् पुनः कालो वर्तते शेषः
यदहं चिन्तयिष्यामि
यदसि त्वं तद्रूपतयाऽऽगत्य
एकदा समुपस्थास्यसि मदन्तिके
निर्जनवेलायां मे परमायुषः?

शब्दार्थाः टिपण्यश्च

प्रतीक्षे	-	प्रतीक्षा करती हूँ।
रजनीम्	-	रात्रिम्, रजनी, द्वि.वि.ए.व., रात को।
जातु	-	अव्ययम्, कभी भी।
ददासि	-	यच्छसि, दा, लट्, म.पु.एक व., देते हो।
प्रतीक्षायाम्	-	प्रतीक्षा शब्द, सप्तमी वि. ए. व. (स्त्री.), प्रतीक्षा में।
विद्यते	-	है (विद्यमान है)।
अवस्थानाय	-	अव + स्था + ल्युट् (अन), चतु. वि.एक.व., ठहरने के लिए।
समाच्छन्नम्	-	सम् + आ + छद् + क्त, ढका हुआ।
प्रसूतैः	-	प्र + सू + क्त, तृ.वि.बहु व., उत्पन्नों से।
अन्तिके	-	समीपे, समीप।
वेलायाम्	-	वेला, स.वि.ए.व., (स्त्री.), समय में।

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) का प्रतीक्षां करोति?

(ख) प्रतीक्षा कीदृशी अस्ति?

(ग) कः दर्शनं न ददाति?

(घ) 'प्रतीक्षा' पाठः कस्मात् ग्रन्थात् अनूदितः?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) अहं कथं प्रतीक्षे?

(ख) राधा पूर्णतया आत्मनः किं कर्तुं वाञ्छति?

(ग) एकदा कुत्र समुपस्थास्यसि?

(घ) एकमेव रूपं भूत्वा कथं चिह्नितम्?

(ङ) छायेव सः कुत्र दृश्यते?

(च) यदा वा दृश्यते तदा कथं भूत्वा तिष्ठति?

3. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

(क) तथापि न भजति <u>स्पष्टरूपता</u>म्।

(ख) अथवा दृश्यते <u>स्फुरज्जलवक्ष</u>सि।

(ग) स्थाने <u>तस्य</u> उपजायमानं दृश्यते।

(घ) <u>निर्जनवेला</u>यां मदन्तिके समुपस्थास्यसि।

(ङ) पुनः <u>कालो</u> वर्तते शेषः।

4. विशेषण-विशेष्यपदानां समुचितं मेलनं कुरुत-

चाञ्चलपूरितायाम्	कालः
उपकूलवर्तिनाम्	रूपम्
नामान्तरचिह्नितम्	दृश्याभिलाषैः
शेषः	प्रतीक्षायाम्
बहुविधैः	पादपानाम्

5. अधोलिखितेषु सन्धिच्छेदं कुरुत-

अर्धाधिकम्, छायेव, तस्योपजायमानम्, अन्यच्चन, कस्यचिन्नाम्नः, तद्रूपतया, प्रतीक्षेऽहम्, तावन्मे।

6. अधोलिखितानां पदानां वाक्येषु प्रयोगं कुरुत-

भूत्वा, स्थाने, दृश्यते, विद्यते, प्रतीक्षा, दर्शनम्, अन्तिके।

7. अधोलिखितानां पदपरिचयो देयः।

ददासि, भूत्वा, दृष्टे, वक्षसि, आयुषः, आत्मनः, कर्तुम्, समाच्छन्नम्।

योग्यताविस्तारः

'पाठ का उड़िया मूल' श्री रमाकान्त रथ प्रणीत 'श्री राधा' पुस्तक से उद्धृत।

मुँ तमकु दिन दिन राति राति चाहिँ रहे किन्तु
तमे जमा देखा दिअ नाहिँ।
मो चाहिँ रहिबा कण? नाना चंचलता
पूर्ण चाहिँ रहिबारे तमे पुरापूरि
रहिबाकु एते जागा काहिँ?
जेतेबेलेबा दिशुछ तम चेहेरार
अर्धाधिक रहे दृष्टि बहिर्भुत होइ,
याहा दिशे ताहा बि मो अशान्तिप्रसूत
नाना दृश्य नाना स्मृति नाना आकांक्षारे
आच्छादित होइ स्पष्ट देखायाए नाहिँ,

बा दिशुछि हलचल पाणिरे येपरि
कूले थिबा गछंकर छाइ।
गोटिए नाआँर रूप दिशिबा मात्र के
अन्य एक नाआँ थिबा अन्य रूपटिए
से जागारे दिशे एकमात्र रूप होइ।
गोटिए रूपरकु मध्य आपणार करिबा भाजन
एतेकाल धरि हेलि नाहिँ।

आउ केते काल बाकी अछि ये भाबिबि
तमे याहा सेपरि भाबरे
दिने आसि पहँचिब मो परमायुर
आउ केहि नथिबा बेलरे?

12077CH11

एकादशः पाठः

कार्याकार्यव्यवस्थितिः

प्रस्तुत पद्य श्रीमद्भगवद्गीता के षोडश अध्याय से संकलित है। मोहग्रस्त अर्जुन को कहे गए ये वचन देशकालातीत हैं अर्थात् सार्वजनीन सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक हैं। अतः आज भी हम सभी के लिए उतने ही ग्राह्य हैं जितने उस समय अर्जुन के लिए थे। इन श्लोकों में दैवी संपद् और आसुरी संपद् का भेद दिखाते हुए और मनुष्य के लिए एक स्वस्थ एवं संयमित जीवन जीने के लिए तथा मृत्यु के पश्चात् भी सद्गति प्राप्त करने के लिए कार्याकार्य का विवेचन किया गया है जो छात्रों के लिए तथा जनसामान्य के लिए आज विचारणीय एवं स्वीकार्य हैं।

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्चयज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।।1

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।2

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत।।3

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम्।।4

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव।।5

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाऽऽचारो न सत्यं तेषु विद्यते।।6

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः।।7

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।।8

असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी।।9

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिता।।10

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ।।11

आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्।।12

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः।।13

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु।।14

आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्।।15

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।16

शब्दार्थाः टिपण्यश्च

सत्त्वसंशुद्धिः - अन्तःकरण की निर्मलता की सम्यक् शुद्धि
दमः - इन्द्रियनिग्रह, इन्द्रियों पर संयम

आर्जवम्	-	अवक्रता, अकुटिलता, सरलता
अपैशुनम्	-	चुगलखोरी का अभाव
भूतेषु	-	सभी प्राणियों पर
अलोलुपत्वम्	-	विषयों के प्राप्त होने पर भी इन्द्रियों में विकार न होना।
मार्दवम्	-	अक्रूरता
ह्री	-	अकार्य के आरम्भ में उसको रोकनेवाली लोकलज्जा।
अचापलम्	-	प्रयोजन के बिना भी वाणी, हाथ आदि को चलाते रहना चापल उसका अभाव-अचापल
धृतिः	-	धैर्य, संयम
शौचम्	-	प्रसङ्गानुसार यहाँ कपट, झूठ आदि से दूर रहना, आभ्यन्तर शौच अभिप्रेत है, शरीरशुद्धिस्वरूप केवल बाह्य स्वच्छता नहीं।
नातिमानिता	-	पूज्यों के प्रति नम्रता।
दम्भ	-	स्वयं को प्रख्यापित करना
दर्प	-	धन या स्वजनादि के कारण दूसरे की उपेक्षा का हेतु गर्वविशेष
अभिमान	-	स्वयं में श्रेष्ठता का अध्यारोप
पारुष्यम्	-	सामने ही रूखा बोलने का स्वभाव
दैवी-संपत्	-	फलकामना से रहित सात्त्विकी क्रिया
आसुरी-संपत्	-	शास्त्रनिषिद्ध, फलाशापूर्वक अंहकार सहित राजसी-तामसी क्रिया
निबन्धाय	-	नियत संसारबन्धन के लिए
क्षयाय जगतः	-	संसार के विनाश के लिए
चापरानपि	-	च+अपरान्+अपि-और दूसरों को भी
आढ्योऽभिजनवानस्मि	-	आढ्यः+अभिजनवान्+अस्मि-धनवान और कुलीन हूँ
यक्ष्ये	-	यज्ञ करूँगा
मोदिष्ये	-	प्रसनन होऊँगाा
प्रसक्ताः	-	आसक्त, लीन
आत्मसंभाविताः	-	स्वयं को ही पूज्य मानने वाले
स्तब्धाः	-	नम्रतारहित
दम्भेनाविधिपूर्वकम्	-	शास्त्रविधि से रहित दम्भपूर्वक
अभ्यसूयकाः	-	द्वेष रखने वाले
क्षिपाम्यजस्रम्	-	क्षिपामि+ अजस्रम्-फेंक देता हूँ+निरन्तर

अभ्यासः

1. प्रश्नानामुत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) दैवी संपद् कस्मै मता?
(ख) कामभोगेषु प्रसक्ताः कुत्र पतन्ति?
(ग) ईश्वरः नराधमान् कासु योनिषु क्षिपति?
(घ) त्रिविधं कस्य द्वारम्?

2. प्रश्नानामुत्तराणि पूर्णवाक्येन लिखत-

(क) जगतः क्षयाय के प्रभवन्ति?
(ख) अज्ञानविमोहिताः जनाः किं विचारयन्ति?
(ग) मनुष्यः किं त्यजेत्?
(घ) नरकेऽशुचौ के पतन्ति?

3. रेखांकितपदमाधृय प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) <u>भूतेषु</u> दया एव दैवी सम्पद्।
(ख) आसुरी सम्पद् <u>निबन्धाय</u> मता।
(ग) <u>आसुराः</u> जनाः प्रवृत्तिं निवृत्तिं च न विदुः।
(घ) <u>मूढाः</u> जन्मनि जन्मनि हरिमप्राप्यैव अधर्मां गतिं यान्ति।

4. शुद्धकथनानां समक्षम् 'आम्' अशुद्धकथनानां समक्षं च 'न' इति लिखत-

(क) नरकस्य द्वारम् पञ्चविधम्।
(ख) आसुरीवृत्तियुक्ताः जनाः दम्भेनाविधिपूर्वकं यजन्ते।
(ग) नष्टात्मनः अल्पबुद्धयः जगतः हिताय प्रभवन्ति।
(घ) तेजः क्षमा धृतिः इत्यादीनि आसुरीसंपदः अंगभूतानि।
(ङ) दम्भः दर्पः अभिमानश्च दैवीसंपदः अंगभूतानि।
(च) अज्ञानविमोहिताः जनाः कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया इति चिन्तयन्ति।

5. श्लोकान्वयं पूरयत-

(क) असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी
अन्वयः- मया............................शत्रुः हतः, अपरान्............................
हनिष्ये, अहम्.......................अहं भोगी, अहं सिद्धः,...................., सुखी।

(ख) दैवी संपद् विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव।।
अन्वयः- विमोक्षाय……………………संपद्, आसुरी (च) निबन्धाय……………।
पाण्डव! मा……………दैवीं संपदम्………………असि।

6. भावार्थं समुचितपदैः पूरयत-

(क) इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।।
श्रीकृष्णः कथयति यत् मूढः अज्ञानविमोहितः जनः……………भवति, किञ्चिद् अल्पमपि प्राप्य………………भवति यत् अद्य मया इदं प्राप्तम् अतः अहम् अन्यम् अपि स्वमनोरथं शीघ्रमेव……………यत् किञ्चिद् ममास्ति तत्तु मम अस्त्येव परमन्यत् सर्वं……………च मम एव भविष्यति।

प्राप्तुं समर्थः, धनमैश्वर्य, आत्माभिमानी, अतिलोलुपः

(ख) त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।
कर्तव्याकर्तव्यं……………………भगवान् श्रीकृष्णः अर्जुनस्य माध्यमेन अस्मान् सर्वान ……………………………यत् कामः, क्रोधः,……………………… एतानि त्रीणि नरकस्य द्वाररूपाणि अतः यः जनः………………………नाशं नेच्छति अपितु स्वकीयं कल्याणमिच्छति सः एतान् द्वारान्……………………… सर्वप्रयत्नैः च एतेषां त्रयाणां त्यागं कुर्यात् येनैतानि त्रीणि द्वारणि सदैव तस्य कृते………………………तिष्ठेयुः सः च उन्नतिपथि अग्रसरो भवेत्।

नोद्घाटयेत्, लोभश्च, आत्मनः, वर्णयन्, पिहितानि, बोधयति

7. समास-विग्रहं समस्तपदं वा लिखित्वा समासस्य नाम अपि लिखत

यथा सत्त्वसंशुद्धिः- सत्त्वानां संशुद्धिः- षष्ठी तत्पुरुष

(क) अज्ञानम्-
(ख) उग्रकर्माणः-
(ग) मनोरथम्-
(घ) नराधमान्-
(ङ) त्रिविधम्-

8. वाच्यपरिवर्तनं कृत्वा लिखत-

यथा- इदमद्य मया लब्धम्- इदमद्य अहं लब्धावान्/लब्धवती।

(क) अहं तान् आसुरीषु योनिषु क्षिपामि-............................

(ख) असौ मया हतः-............................

(ग) अल्पबुद्धयः उग्रकर्माणः जगतः क्षयाय प्रभवन्ति।............................

(घ) मया यक्ष्यते दीयते च............................

(ङ) अनेकचित्तविभ्रान्ताः मोहजालसमावृताः नरकेऽशुचौ पतन्ति।......................

9. प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत-

यथा प्रवृत्तिः- प्र उपसर्गः, वृत्, क्तिन् प्रत्ययः

(क) अवष्टभ्य - ....

(ख) मता - ....

(ग) अलोलुपत्वम्- ....

(घ) प्रद्विषन्तः - ....

(ङ) विमोहिताः - ....

योग्यताविस्तारः

कर्तव्याकर्तव्यविषये कतिपयानि अन्यानि पद्यानि अपि ज्ञातव्यानि-

1. **खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति।**
   आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति।।

2. **मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।**
   मनस्यन्यद् वचस्यन्यद् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्।।

3. **अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति,**
   प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
   पराक्रमश्चाबहुभाषिता च,
   दानं यथाशक्तिः कृतज्ञता च।।

4. **षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्याः भूतिमिच्छता।**
   निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

5. उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं, क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च, लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः।।

6. यज्जीव्यते क्षणमपि प्रथितं मनुष्यैः
विज्ञानशौर्यविभवार्यगुणैः समेतम्
तन्नाम जीवितमिह प्रवदन्ति तज्ज्ञाः,
काकोऽपि जीवति चिराय बलिञ्च भुङ्क्ते।

12077CH12

द्वादशः पाठः

विद्यास्थानानि

प्रस्तुत पाठ राजशेखर की काव्यमीमांसा से संगृहीत है। काव्यमीमांसा काव्शास्त्र परम्परा में एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसमें काव्यशास्त्र की विशेष व्याख्या के अतिरिक्त संस्कृत वाङ्मय की सुविस्तृत ज्ञानराशि का परिचय है, जो तत्कालीन भारत के अध्ययन-अध्यापन के विशाल परिदृश्य को प्रकट करता है। इसमें चतुर्दश-विद्याओं के विषय मे चर्चा की गयी है। यहाँ बताया गया है कि वाङ्मय के दो भेद होते हैं। शास्त्र और काव्य। इस ग्रन्थ के आरम्भ में शास्त्र के भेद और उपभेदों का परिगणन किया गया है।

इह हि वाङ्मयमुभयथा शास्त्रं काव्यं च। शास्त्रं द्विविधा-अपौरुषेयं पौरुषेयं च। अपौरुषेयं श्रुतिः। श्रुतिः पुनः द्विविधा-मन्त्राः ब्राह्मणं च। विवृत्तक्रियातन्त्रा मन्त्राः। मन्त्राणां स्तु तिनिन्दाव्याख्यानविनियोगग्रन्थो ब्राह्मणम्। ऋग्यजुःसामवेदास्त्रयी आथर्वणश्च तुरीयः।

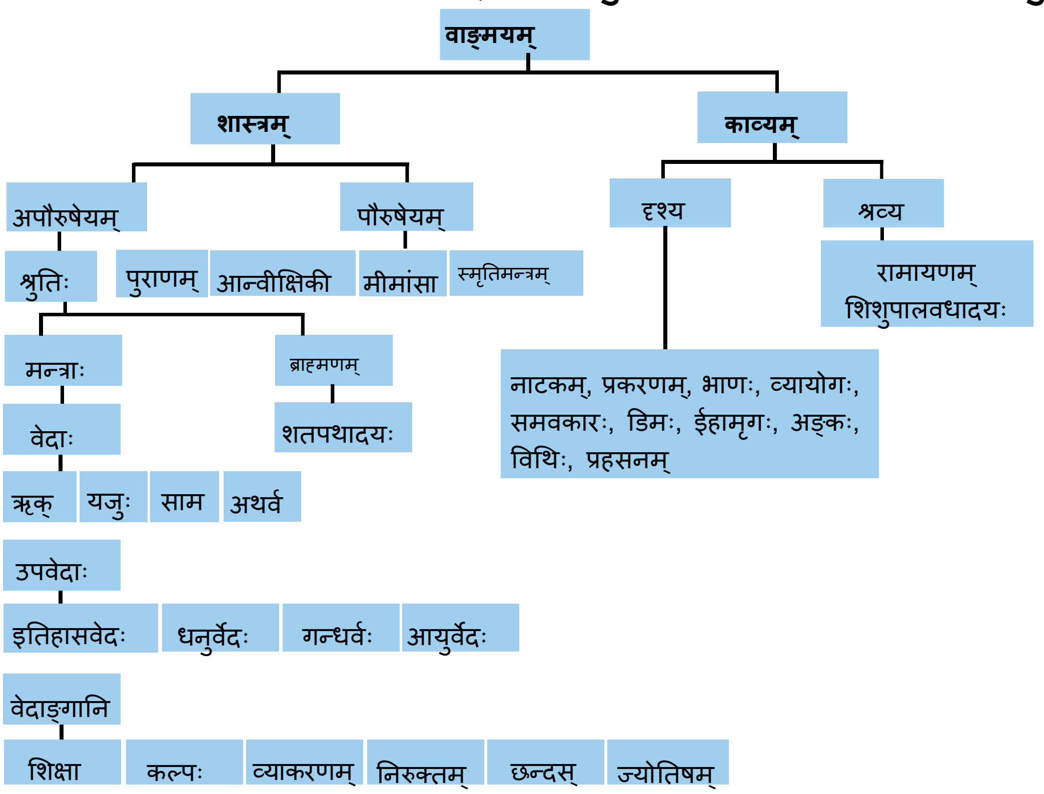

तत्रार्थव्यवस्थितपादाः ऋचः। ताः सगीतयः सामानि। अच्छन्दांस्यगीतानि यजूंषि। ऋचो यजूंषि सामानि चाथर्वणं त इमे चत्वारो वेदाः। इतिहासवेदः धनुर्वेदः गन्धर्ववेदः आयुर्वेदः च उपवेदाः। "वेदोपवेदात्मा सार्ववर्णिकः पञ्चमो गेयवेदः" इति द्रौहिणिः। "शिक्षा, कल्पो, व्याकरणं, निरुक्तं, छन्दोविचितिः, ज्योतिषं च षडङ्गानि" इत्याचार्याः। "उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम्" इति यायावरीयः। ऋते च तत्स्वरूपपरिज्ञानाद्वेदार्थानवगतिः। यथा-

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति अनश्नन्न्यो अभिचाकशीति।।

तत्र वर्णानां स्थान-करण-प्रयत्नादिभिः निष्पत्तिनिर्णयिनी शिक्षा। नानाशाखाधीतानां मन्त्राणां विनियोजकं सूत्रं कल्पः। सा च युजर्विद्या। शब्दानामन्वाख्यानं व्याकरणम्। निर्वचनं निरुक्तम्। छन्दसां प्रतिपादयित्री छन्दोविचितिः। ग्रहगणितं ज्योतिषम्। पौरुषेयं तु पुराणम्, आन्वीक्षिकी, मीमांसा, स्मृतितन्त्रम् इति चत्वारि शास्त्रणि। तत्र वेदाख्यानोपनिबन्ध- नप्रायं पुराणमष्टादशधा। यदाहुः-

सर्गः प्रतिसंहारः कल्पो मन्वन्तराणि वंशविधिः।
जगतो यत्र निबद्धं तद्विज्ञेयं पुराणमिति।।

"पुराणप्रभेद एवेतिहासः" इत्येके। स च द्विधा परिक्रियापुराकल्पाभ्याम्। यदाहुः-

परिक्रिया पुराकल्प इतिहासगतिर्द्विधा।
स्यादेकनायका पूर्वा द्वितीया बहुनायका।।

तत्र रामायणं भारतं चोदाहरणे। निगमवाक्यानां न्यायैः सहस्रण विवेक्त्री मीमांसा। सा च द्विविधा विधिविवेचनी ब्रह्मनिदर्शनी च। अष्टादशैव श्रुत्यर्थस्मरणात्स्मृतयः। तानि इमानि चतुर्दश विद्यास्थानानि, यदुत वेदाश्चत्वारः षडङ्गानि, चत्वारि शास्त्राणि इत्याचार्याः।

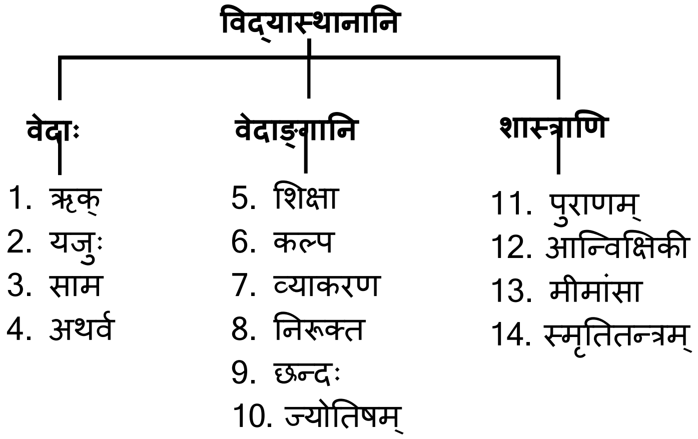

शब्दार्थाः टिपण्यश्च

वाङ्मयम्	-	वाग्जालम्, वाणी प्रपञ्च
उभयथा	-	द्विविधा, दो प्रकार वाला।
अपौरुषेयम्	-	पुरुषेण न निर्मितम्, जो पुरुष के द्वारा रचित नहीं है।
पौरुषेयम्	-	पुरुषेण निर्मितम्, जो पुरुष के द्वारा रचित है।
विवृतम्	-	सम्यक् निरूपितम्, ठीक प्रकार से वर्णित।
क्रियातन्त्राः	-	कर्मकाण्डकलापाः, कर्मकाण्ड।
सार्ववर्णिकः	-	सर्वेषां वर्णानां कृते उपयुक्तः, सब वर्णों के लिए उचित।
यायावरीयः	-	नाम (राजशेखरः), राजशेखर।
सुपर्णा (वैदिक प्रयोग)	-	खगौ, दो पक्षी।
सयुजा (वैदिक प्रयोग)	-	सहचरौ, एक साथ रहने वाले।
परिषस्वजाते	-	आलिङ्गत (सेवेते) आलिङ्गन करते हैं (निवास करते हैं)।
पिप्पलम्	-	फलम्, फल।
अनश्नन्	-	अखादन्, न खाता हुआ।
अत्ति	-	खादति, खाता है
अभिचाकशीति	-	प्रकाशते, प्रकाशित होता है।
निष्पत्तिः	-	उत्पत्तिः, उत्पत्ति।
निर्णयिनी	-	निर्णयिका, निर्णय करने वाली।
आपिशलि	-	नाम, नाम
अधीतानाम्	-	पठितानाम्, पढ़े हुओं का।
अन्वाख्यानम्	-	प्रकृतिप्रत्ययविभाजनम्, प्रकृति प्रत्यय विभाग द्वारा शब्दार्थ ज्ञान।
पुरस्तात्	-	पूर्वम्, पहले।
आख्यानम्	-	प्रवचनम्, कथन।
उपनिबन्धनम्	-	संग्रहणम्, संग्रह।
परिक्रिया	-	यत्र एकनायकेन सम्बद्धा कथा वर्णिता, जहाँ एक नायक से सम्बन्धित कथा वर्णित हो (यथा रामायण)।
पुराकल्प	-	यत्र बहुनायकसम्बद्धा कथा, जहाँ अनेक नायकों से सम्बन्धित कथा हो (जैसे महाभारत)।
विवेक्त्री	-	विवेचिका, विवेचन करने वाली

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) वाङ्मयस्य उभौ भेदौ लिखत?
(ख) अपौरुषेयं किम् अस्ति?
(ग) विवृत्तक्रियातन्त्राः के सन्ति?
(घ) ब्राह्मणं केषां स्तुतिनिन्दाव्याख्यानविनियोगं च करोति ?
(ङ) वेदाः कति सन्ति? तेषां नामानि लिखत।
(च) षडङ्गानां नामानि लिखत।
(छ) व्याकरणं किं कथ्यते?

2. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) <u>शब्दानाम्</u> अन्वाख्यानं व्याकरणम्।
(ख) <u>पुराणं</u> पौरुषेयम् अस्ति।
(ग) <u>ज्योतिषं</u> ग्रहगणितम् अस्ति।
(घ) <u>इतिहासः</u> पुराणप्रभेदोऽस्ति।
(ङ) <u>मीमांसा</u> सहस्रेण न्यायैः निगमवाक्यानां विवेक्त्री अस्ति।

3. उचितां पंक्तिं मञ्जूषायाः चित्वा समक्षं लिखत-

विवृत्तक्रियातन्त्रा, इतिहासवेदः धनुर्वेदः गन्धर्वः आयुर्वेदः च, द्विविधामन्त्राः ब्राह्मणञ्च, अपौरुषेयं पौरुषेयं च, शास्त्रं काव्यं च

(क) वाङ्मयम् उभयथा - ....
(ख) शास्त्रं द्विधा - ....
(ग) श्रुतिः - ....
(घ) मन्त्राः - ....
(ङ) उपवेदाः - ....

4. उचितमेलनं कुरुत-

(क) चत्वारि शास्त्राणि - ज्योतिषम्
(ख) शब्दानामन्वख्यानम् - पुराणम्
(ग) मन्त्राणां विनियोजकं सूत्रं - कल्पः
(घ) पौरुषेयं - व्याकरणम्

(ङ) ग्रहगणितम् - पुराणम्, आन्वीक्षिकी, मीमांसा, स्मृतितन्त्रम्।

5. उचितविभक्तिं प्रयुज्य संख्यावाचिशब्दानां प्रयोगं कुरुत-

(क) .... वेदाः। (चतुर्)
(ख) .... अङ्गानि। (षट्)
(ग) .... शास्त्राणि। (चतुर्)
(घ) .... नायकः। (एक)
(ङ) .... पुराणानि। (अष्टादश)

6. अव्ययपदानि चित्वा लिखत-

(क) जगतो यत्र निबद्धं तद्विज्ञेयं पुराणम्। - ....
(ख) पुराणप्रभेद एव इतिहासः। - ....
(ग) अष्टादश एव श्रुत्यर्थस्मरणात्स्मृतयः। - ....
(घ) स च द्विधा परिक्रियापुराकल्पाभ्याम्। - ....
(ङ) तत्र वर्णानां स्थान-करण-प्रयत्नादिभिः
निष्पत्ति निर्णयिनी शिक्षा। - ....

7. सन्धिं कुरुत-

(क) ब्राह्मणम्+च - ....
(ख) आथर्वणः+च - ....
(ग) वेद+आत्मा - ....
(घ) अष्टादश+एव - ....
(ङ) छन्दांसि+अगीतानि - ....

8. निम्नलिखितशब्दानां सहायतया वाक्यप्रयोगं कुरुत-

इह, वेदाः, अत्ति, अनश्नन्, एव

9. विपरीतार्थकपदं लिखत-

(क) पौरुषेयम् - ....
(ख) एकः - ....
(ग) यत्र - ....
(घ) यत् - ....
(ङ) यथा - ....

योग्यताविस्तारः

अयं पाठः काव्यमीमांसायाः सङ्गृहीताः। अस्मिन् पाठे अष्टादश काव्यविद्यायाः वर्णनम् अस्ति। यथा-

शास्त्रसङ्ग्रहः
शास्त्रनिर्देशः
काव्यपुरुषोत्पत्तिः
पदवाक्यविवेकः
पाठप्रतिष्ठा
अर्थानुशासनं
वाक्यविधयः
कविविशेषः
कविचर्या
राजचर्या
काकप्रकाराः
शब्दार्थाहरणोपायाः
कविसमयः
देशकालविभागः
भुवनकोशः
कविरहस्यम्
प्रथममधिकरणम्

मङ्गलम्

ॐ स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।

पुनर्ददताघ्नता जानता सङ्गमेमहि ।।1।।

(ऋग्वेद - 5.51.15)

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।।2।।

(यजुर्वेद - 5.36)

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।।3।।

(अथर्ववेद - 19.15.6)

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ।।4।।

(अथर्ववेद - 19.41.1)

भावार्थः

सूर्य और चन्द्रमा के समान हम कल्याण के पथ का अनुगमन करें। निरन्तर दान करते हुए, टकराव/हिंसा को छो\ड़ कर परस्पर एक दूसरे को जानते/समझते हुए साथ-साथ चलें ।।1।।

हे अग्निदेव! हमें धन व ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे मार्ग से ले चलें। आप सम्पूर्ण उत्तम मार्गों के ज्ञाता हैं। अतः हमें पापाचरण एवं कुटिल मार्ग से बचाएँ। हम आपको बहुत प्रकार से नमस्कार करते हैं ।।2।।

मित्रों, शत्रुओं तथा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनिष्टों से हमें किसी प्रकार का भय न हो। हमें दिन और रात्रि में निर्भयता की प्राप्ति हो। अभय के लिए सभी दिशाएँ मित्रवत् कल्याणकारी हों ।।3।।

सबके हितचिन्तक आत्मज्ञानी ऋषि सृष्टि के प्रारम्भ में तप और दीक्षादि नियमों का पालन करने लगे। उसी से राष्ट्रीय भावना, बल और सामर्थ्य की उत्पत्ति हुई। अतएव ज्ञानी लोग उस (राष्ट्र) के समक्ष विनम्र हों (राष्ट्र सेवा करें)।।4।।

परिशिष्ट

अनुशंसित ग्रन्थ

क्र.सं.	ग्रन्थनाम	लेखक	संपादक/प्रकाशक
1.	अथर्ववेदः	-	सातवलेकर पारडी, 1957
2.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
3.	ऋग्वेदः	-	सं.प्र.एन.एस.सोनटक्के, वैदिक संशोधन मण्डल, पूना-महाराष्ट्र-02
4.	कथासरित्सागर	सोमदेव	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
5.	कथासरित्सागर	शूद्रक	हिन्दी रूपान्तर प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली-07
6.	कादम्बरी	बाणभट्ट	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
7.	चरकसंहिता	चरक	चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
8.	जातकमाला	आर्यशूर	सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
9.	दशकुमारचरितम्	दण्डी	श्री विश्वनाथ झा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली-07
10.	पञ्चरात्रम्	भास	भासनाटकचक्रम, सं.सी.आर.देवधर, ओरिएण्टल बुक एजेन्सी, पूना-1945
11.	पुरन्ध्रीपञ्चकम्	वेदकुमारी घई	राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, जनकपुरी, नई दिल्ली
12.	प्रतापविजयः	ईशदत्तः	वाणीविलास, वाराणसी
13.	बुद्धचरितम्	अश्वघोष	चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी
14.	भारत विजयनाटकम्	मथुराप्रसाद दीक्षित	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
15.	भोजप्रबन्धः	बल्लालसेन	चौखम्बा संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली
16.	महाभारतम्	व्यास	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
17.	श्रीमद्भगवद्गीता	व्यास	गीताप्रेस, गोरखपुर
18.	काव्यमीमांसा	राजशेखर	-

19.	महाभाष्यम्	पतञ्जलि	चारुदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
20.	मृच्छकटिकम्	शूद्रक	निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई
21.	मृच्छकटिकम्	शूद्रक	हिन्दी अनुवाद मोहन राकेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-1962
22.	यजुर्वेदः	उव्वटमहीधर भाष्य	चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1912
23.	रघुवंशम्	कालिदास	मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली-07
24.	रामायणम्	वाल्मीकि	नाग पब्लिशर्स, जवाहरनगर, दिल्ली-07
25.	वैदिक साहित्य और संस्कृति		बलदेव उपाध्यायशारदा मंदिर, वाराणसी
26.	शिवराजविजयः	अम्बिकादत्त व्यास	साहित्य पुस्तक भण्डार, मेरठ
27.	श्री राधा	रमाकान्त रथ	-
28.	संस्कृत नाटक	ए.बी.कीथ, उदयभानुसिंह	(हिन्दी अनुवाद), मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली-07
29.	संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास	डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी
30.	संस्कृत साहित्य का इतिहास		बलदेव उपाध्यायशारदा मन्दिर, वाराणसी
31.	हितोपदेशः	नारायणशर्मा	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07

टिप्पणी

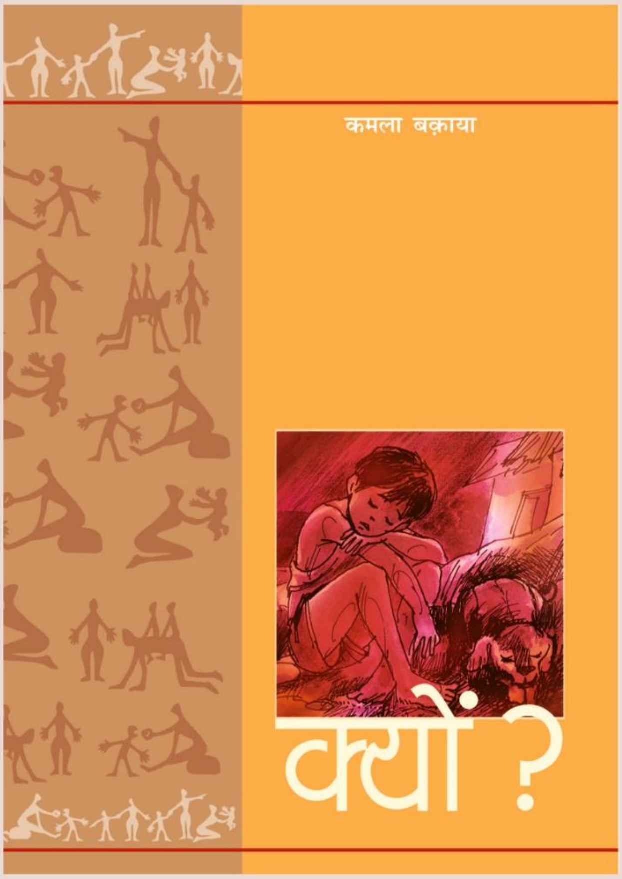

क्यों?

कमला बक़ाया

मूल्य 20.00 / पेपरबैक / पृष्ठ 16

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क कीजिए।

12077

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 81-7450-637-3